प्रकाशक :
अ० वा० सहस्रबुद्धे
मन्त्री, अखिल भारत सर्व-सेवा संघ
वर्धा (म० प्र०)

पहली बार : २०,०००
दिसम्बर, १९५५
मूल्य : चार आना

मुद्रक
[illegible] दास
[illegible] प्रेस,
काशीपुरा, बनारस

दो शब्द

श्री गोविन्ददासजी ने 'भूदानयज्ञ' पर यह नाटक लिखा है। अुन्होंने चाहा कि "दो शब्द" अुसके लिअे मैं लिख दूँ। अुनका मेरा अितना आंतरिक निकट संबंध है कि अुनकी अिच्छा अमान्य करना मेरे लिअे असंभव था, अिसलिअे लिख रहा हूँ। वैसे नाटकादि ललित-साहित्य के बारे में अभिप्राय देने का मेरा कोअी खास अधिकार मैं नहीं मानता।

दुनिया की प्राचीन और अर्वाचीन १०, १५ भाषाओं का साहित्य पढ़ने का मुझे मौका मिला है। लेकिन सब भाषाओं के मिलाकर अेकाध दर्जन से ज्यादह नाटक मैंने पढ़े नहीं होंगे, और देखा तो सिर्फ अेक ही नाटक है। मुझे याद है कि वह भी मैं पूरा नहीं देख पाया था। थोड़ी देर देखकर मैं थियेटर के बाहर निकल आया था। बचपन में मुझे घूमने का बहुत शौक था। जिस दिन वह नाटक देखने गया था, अुस दिन घूमना अुतना कम हुआ अुसी का मुझे अफसोस रहा। अैसा शख्स आज नाटक का 'आमुख' लिख रहा है।

लेकिन अिसके यह मानी नहीं है कि मुझे नाटक की कोअी नफरत है। बल्कि अुल्टे मैं नाटक की सर्वोत्तम कला में गिनती करता हूँ। नाटक को लोग अेक खेल समझते हैं। देखनेवालों के लिअे तो वह अेक खेल जरूर है, लेकिन लिखनेवाले के लिअे वह हृदय का निचोड़ है।

प्रत्यक्ष अुपदेशात्मक साहित्य से सूचक साहित्य अूँचा माना जाता है, और वह ठीक भी है। अुसका कारण मैं यह समझता हूँ कि प्रत्यक्ष अुपदेश में सामनेवाले पर अेक प्रकार का आक्रमण होता है। सूचक-शैली में वैसा आक्रमण नहीं होता, और अिसलिअे अहिंसा के लिअे वह अधिक अनुकूल है। सूचक-साहित्य में नाटक शिरोमणि है। पर अुत्तम नाटक लिखना आसान बात नहीं है। कालिदास शाकुन्तल लिखकर अमर हो गया।

शेक्स्पीयर ने वैसे सख्या में तो कअी नाटक लिख दिये, लेकिन अुसकी कीर्ति अुसके दो चार नाटकों पर ही निर्भर है

जिस नाटक का हेतु समाप्ति के पहले मालूम नहीं होता है, और समाप्ति के पहले जिसका रसिकों पर विविध प्रभाव पड़ता है, "जिसकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत तिन्ह देखी तैसी" यह वर्णन जिस नाटक पर लागू होता है, वह सर्वोत्तम कृति मानी जायगी। जाहिर ही गोविन्ददासजी का यह नाटक अुस कोटि का नहीं है। अुसका हेतु आरभ से आखीर तक प्रकट है।

लेकिन हेतु प्रकट होने पर भी अगर नाटक रंजन पूर्वक भावनापरिपोष कर दे, तो हेतु का प्रकट होना गुनाह तो नहीं माना जायगा। गोविन्ददासजी ने अपनी शक्ति के अनुसार वैसा प्रयत्न अिसमें किया है। और अुनको जो यश मिला होगा, अुसका कारण न सिर्फ अुनकी लेखन-कला होगी, बल्कि साथ-साथ भूदान यज्ञ के काम का जो अुनको जाती अनुभव हुआ है, वह भी होगा। मै आशा करूँगा कि अिसका प्रकट हेतु अिसके परिणाम मे प्रकटतर होगा।

पड़ाव इमामगंज

(जिला पटना)

२६–१–'५४

—विनोबा के प्रणाम

लेखक का निवेदन

भूदान यज्ञ समिति, मध्यप्रदेश के संयोजक श्री दादाभाओी नाइक, अुनके साथी श्री ठाकुरदास बंग और श्री आचार्य विनोबा भावे के सेक्रेटरी श्री दामोदरदास मूँदड़ा ने एक तरह की उत्कट इच्छा-सी प्रकट की कि मैं भूदान यज्ञ पर एक नाटक लिख दूँ।

मैंने जीवन में दूसरी बार फरमाअिश पर लिखना तय किया, पर मैं जब नाटक के सिनापसेज बनाने बैठा, जो मैं अपनी हरअेक कृति के लिअे सदा करता हूँ, तब मैंने देखा कि यह नाटक लिखना अुतना सरल नहीं है, जितना मैंने सिनापसेज लिखने के लिअे कलम अुठाते समय सोचा था।

सबसे बड़ी समस्या मेरे सामने यह आयी कि इस नाटक के पात्रों में कोअी सच्चे पात्र भी हों या सब काल्पनिक। इस समस्या पर मैं बहुत समय तक विचार करता रहा और अंत में अिसी निर्णय पर पहुँचा कि बिना सच्चे पात्रों के यह नाटक उसी प्रकार नहीं लिखा जा सकता, जिस प्रकार रामकथा पर राम, लक्ष्मण, सीता आदि के बिना, महाभारत की कथा पर कृष्ण, पाण्डव, द्रौपदी आदि के बिना और कोअी भी अैतिहासिक नाटक उस अैतिहासिक कथा के अैतिहासिक पात्रों के बिना। अतः अिस समस्या के मानसिक हल के बाद मैंने अिस नाटक में श्री विनोबा भावे, डा० राजेन्द्रप्रसाद, पं० जवाहरलाल नेहरू, श्री जयप्रकाश नारायण आदि को नाटक के पात्र के रूप में लेने का निर्णय किया। हाँ, अुनके साथ मुझे बहुत से काल्पनिक पात्र भी लेने पड़े हैं, जैसे अन्य पौराणिक और अैतिहासिक नाटकों में करना पड़ता है।

पर यदि आप जीवित विनोबाजी, राजेन्द्रबाबू, जवाहरलालजी, जयप्रकाश नारायणजी आदि को मंच पर लाना चाहते हैं, तो इस कला में, जिसका प्रधान गुण दूर तक स्वाभाविकता है, यह कम कठिन काम नहीं है।

अत. जो नाटक खेलने के लिअे लिखवाया या लिखा जा रहा हो और जिमकी रचना सच्चे पात्रो को मच पर प्रदर्शित किये बिना सभव न हो, अुस नाटक की यह कठिनाअी मुझे सर्वोपरि कठिनाअी जान पड़ी।

अभी हाल ही मे मैने पश्चिम के प्रसिद्ध नाटककार डिकवाटर्स का "अब्राहम लिकन" नाटक अमरीका मे देखा था। मच पर लिंकन को लाया गया था और लिकन की मूर्ति अथवा चित्रों मे जैसा लिंकन दिखाअी पड़ता है, ठीक वैसा ही मच पर आनेवाला लिकन दीख पड़ता था, जरा भी तो अतर नही। पता लगाने पर मालम हुआ कि वहाँ के कलाकार मोम (वेक्स) के चेहरे बनाते है। आँखो के स्थान पर गढे रहते है, अत' आँखे तो अुमी की रहती है जो चेहरा लगाता है, शेष सारे अवयव जिसका चेहरा होता है, ठीक उसके अवयवो के अनुसार रहते है। अूपर और नीचे के ओठो पर यह चेहरा अिस प्रकार बैठ जाता है कि बोलने मे भी कठिनाअी न पड़े। अब यदि कोअी अूँचा पात्र है, तो किमी अूँचे व्यक्ति को, यदि कोअी ठिगना पात्र है, तो ठिगने व्यक्ति को, यदि कोअी मोटा है तो मोटे व्यक्ति को और यदि कोअी दुबला है तो दुबले को ये मोम के चेहरे लगाकर जिन्हें भी मच पर प्रदर्शित करना हो, नाटक मे या फिल्म म, अुन्हें सर्वथा स्वाभाविक रूप म लाया जा सकता है।

लेकिन साहित्य म चाहे नाटक हो, चाहे अुपन्यास और चाहे कहानी, अुनका विकास बिना सघर्ष के नहीं होता। यह सघर्ष बाह्य और आतरिक दोनों प्रकार का हो सकता है। भूदान-यज्ञ नाटक का सघर्ष किस तरह का हो, यह मेरे सामने दूसरी समस्या थी। बहुत कुछ विचारने के पश्चात् म अिस निर्णय पर पहुँचा कि दार्शनिक दृष्टि से यथार्थ म यह सघर्ष भूदान-यज्ञ के दर्शन और साम्यवादी दर्शन का है। अिसलिअे मैने अिस नाटक म यही सघर्ष रखा है।

अिस नाटक के अन्तिम गीत को छोड़कर, जो मेरी पुत्री रत्नाकुमारी ने अिसी नाटक के लिअे लिखा है, शेष गीत अिस नाटक के लिए नहीं लिखे गये

'भूदान-यज्ञ आन्दोलन' में जो गीत बहुत लोकप्रिय हुअे हैं, अुन्हें अिस
टक में ले लिया गया है।

कसौटी पर कसने से यह नाटक कहाँ तक खरा अुतरता है, अिस
न्ध में मुझे कुछ भी कहने का अधिकार नहीं है। यदि यह नाटक सफल
ा, तो अिसका श्रेय होगा भूदान-यज्ञ को और यदि विफल हुआ तो अिसका
म्मेदार मैं होऊँगा।

अंत में एक बात और लिखकर अिस निवेदन को समाप्त करता हूँ। अिस
टक में विनोबाजी, राजेन्द्रप्रसादजी, जवाहरलालजी और जयप्रकाश नारा-
जी के मुख से मैंने जो कुछ कहलाया है, अुन अंशों को चारों ही महानु-
व या तो सुन या पढ़ चुके हैं और चारों की स्वीकृति के बाद ही ये अंश
स नाटक में प्रकाशित किये जा रहे हैं।

जबलपुर,
बसन्त पंचमी, संवत् २०१०

—गोविन्ददास

संक्षिप्त संस्करण का निवेदन

'भूदान यज्ञ' नाटक मैंने संवत् २०१० में लिखा था। मालूम हुआ कि
टक की काफी बिक्री हुई, पर आवश्यकता महसूस हुई अेक संक्षिप्त
स्करण की। यह उस नाटक का संक्षिप्त संस्करण है।

...नाटशाला
...त् २०१२

—गोविंददास

पात्र, स्थान, समय

मुख्य पात्र—

विनोबा भावे

राजेन्द्रप्रसाद

जवाहरलाल नेहरू

जयप्रकाश नारायण

रामचन्द्र रेड्डी—जिसने पहला भूदान दिया

दामोदरदास मूँदड़ा—विनोबाजी के सेक्रेटरी

कुछ कांग्रेसी

कुछ प्रजा-समाजवादी

कुछ जनसंघी, रामराज्य परिषद् वाले अौर हिन्दू सभाअी

कुछ साम्यवादी

कुछ विदेशी पत्रकार

कुछ शहराती अौर देहाती नागरिक

मुख्य स्थान—

अुत्तरप्रदेश में गोरखपुर जिले का अेक ग्राम

तेलंगाना में नलगुंडा

पौनार (वर्धा) का परमधाम आश्रम

तेलंगाना में पोचमपल्ली

नयी दिल्ली में प्रधान मन्त्री का गृह

कलकत्ते में विक्टोरिया मेमोरियल का बाग

बिहार में गया नगर अौर गया जिले के गाँव

बम्बई में जहाजी बंदर

सेवाग्राम

समय—

अप्रैल सन् १९५१ से सन् १९६०

सबै भूमि गोपाल की

उपक्रम

स्थान—गोरखपुर जिले का अेक गाँव

समय—रात्रि

[जमीन पर अेक जाजम बिछी है, जिस पर कुछ शहराती और देहाती स्त्री, पुरुष और बच्चे बैठे हैं। अेक अधेड़ अवस्था का व्यक्ति, जो खादी का कुरता और धोती पहने हुअे है तथा सिर पर गांधी टोपी लगाये है, खड़ा हुआ इस समुदाय से कह रहा है।]

खड़ा हुआ व्यक्ति—भारत को स्वराज्य मिले वर्षों बीत गये। स्वराज्य प्राप्त करना छोटा काम था, यह मैं नहीं कहता, लेकिन स्वराज्य पाकर इस देश की जनता जिस सुख की कल्पना कर रही थी, वह सुख उसे अब तक नहीं मिला।

दूसरा व्यक्ति—इसकी मुख्य वजह है देश की गरीबी।

अेक अन्य व्यक्ति—अरे, इस राज से तो अंगरेजी राज ही अच्छा था।

खड़ा हुआ व्यक्ति—(उत्तेजित होकर) यह आप क्या कह रहे हैं! स्वराज्य से अंगरेजी राज्य अच्छा! यह तो हमें स्वप्न में भी नहीं सोचना चाहिअे। दरअसल स्वतन्त्रता नोन, तेल, लकड़ी की तराजू पर नहीं तौली जा सकती। अगर आज़ादी और उसकी रक्षा के लिअे स्वतन्त्र भारत में [illegible] और [illegible] बलिदान करना पड़े, तो भी हमें पीछे नहीं हटना है।

(जोर की करतल-ध्वनि)

खड़ा हुआ व्यक्ति—मैं सत्य और अहिंसा में पूरा विश्वास रखता

हूँ, अेक शातिप्रिय आदमी भी माना जाता हूँ, किन्तु जब मैं स्वराज्य और अंग्रेजी राज्य का किसीको मिलान करते सुनता हूँ, तब मेरा खून खौलने लगता है। किन्तु हमारे देश मे जो भीषण गरीबी है अुससे मै आँखें नहीं मूँद सकता और न किसीसे कह सकता हूँ कि वह अिस गरीबी की पर-वाह न करे। अिस गरीबी को पूरी तौर से पहचान कर अिसे दूर करने के लिअे हमें सारी कोशिशें करनी है।

खडा हुआ व्यक्ति—यह देश कितना गरीब है अिसकी जानकारी के लिअे गोरखपुर जिले के गाँव की ही अेक बात पेश करता हूँ। यह है अुन गरीबों का गोबर में से अनाज के दाने चुनने, उन्हें धोकर सुखाने, फिर अपनी रूखी-सूखी रोटियों के लिअे अुन दानों के आटा पीसने और अुस आटे की रोटियाँ खाने का, जिसका हाल आप लोगो ने भी सुना होगा।

दूसरा व्यक्ति—सुना क्या, आँखों से देखा है।

तीसरा व्यक्ति—जो ये गोबर मे से अनाज के दाने चुने जाते है, अुनका भी ठेका होता है, जिसके खेत मे से गोबर के दाने चुने जाते हैं अुसे जो सबसे ज्यादा कीमत देता है अुसे ही गोबर मे से दाने चुनने का अधि कार मिलता है।

खड़ा हुआ व्यक्ति—खूब जानता हूँ। (लम्बी साँस लेकर) जिस भूमि पर जन्म लेने को कभी देवता तरसते थे, अुस भूमि के निवासी अब जितने गरीब हो गये हैं, अुतने शायद दुनिया में किसी देश के नहीं।

गीत

सुने री मैंने निर्बल के बल राम।
पिछली साख भरूँ सतन की अडे सँवारे काम॥
अपबल तपबल और बाहुबल चौथो है बल दाम।
सूर किशोर कृपा तें सब बल हारे को हरिनाम॥

पहला अंक

पहला दृश्य

[जंगल का दृश्य साम्यवादियों की गुप्त बैठक]

प्रेम—जितनी भी मुझमें ताकत है, उस सारी ताकत के साथ कहता हूँ कि जब जो जमीन जोतते हैं अुनके पास एक डिसमल जमीन नहीं, तब जिन्होंने अपनी जमीन देखी तक नहीं है, अुन्हें सैकड़ों, हजारों और लाखों अेकड़ जमीन पर अपना कब्जा रखने का कोअी अधिकार नहीं है।

दूसरा—मैं आपसे भी आगे जाना चाहता हूँ। मेरी राय में तो किसी अैसे व्यक्ति के पास जो खुद जमीन नहीं जोतता, अेक डिसमल जमीन भी नहीं रहनी चाहिअे।

तीसरा—ठीक, जमीन अुनकी जो अुसे जोते।

चौथा—मैं तो यह कहूँगा कि जमीन किसीकी नहीं है। दुनिया पाँच तत्त्वों से बनी है: पृथ्वी, जल, वायु, तेज और आकाश। जब दूसरे चार तत्त्वों पर किसीका अधिकार नहीं, तब पृथ्वी पर किसी व्यक्ति का स्वामित्व कैसे हो सकता है? अिसीलिए हमारा साम्यवाद कहता है कि जमीन पर व्यक्ति का अधिकार न होकर राज्य का अधिकार होना चाहिए।

पहला—किस राज्य का? उस राज्य का अधिकार, जो जमींदारों का, पूँजीपतियों का, इस प्रकार के शोषणकर्ताओं का राज्य है!

दूसरा और तीसरा (एक साथ)—अिसीलिए तो हम कहते हैं जमीन अुनकी जो अुसे जोते।

पहला—यह ठीक है। रूस और चीन में भी अब तक जमीन राज्य की नहीं हो पाती है। वह अुन्हीं की है, जो अुसे जोतते हैं।

छठा—पर भाअी, अिन देशों की हालत और हमारे देश की हालत में अन्तर है।

सातवाँ—कैसा ?

आठवाँ—वहाँ पहले या तो साम्यवादी अथवा साम्यवादियों के नेतृत्व की सरकारें कायम हुअी और उन सरकारों ने जमीन के मसले को हल किया। यहाँ तो जैसा अभी अेक भाअी ने कहा, जमींदारों, पूँजीपतियों और शोषणकर्ताओं की सरकार है।

नवाँ—तभी तो मैंने कअी बार कहा कि अिस प्रश्न को हम हल करेंगे।

आठवाँ—कैसे ?

नवाँ—वही योजना आपके सामने रखनी है।

बहुत से व्यक्ति (अेक साथ)—रखिये। जरूर रखिये। न जाने कितने युद्ध जमीन के कारण ही लड़े गये, न जाने कितनी क्रांतियाँ जमीन के कारण ही हुईं।

अेक व्यक्ति—और हमारे देश का तो यह सबसे महत्त्वपूर्ण आर्थिक प्रश्न है, क्योंकि यहाँ की आबादी में तो नब्बे फी सदी आबादी जमीन पर ही अपना निर्वाह करती है।

नवाँ—मेरी योजना खून की नदियाँ बहानेवाली योजना है।

(कुछ व्यक्ति चौंक पड़ते हैं)

नवाँ—लीजिये, आप तो अभी से चौंक पड़े। अरे! संसार के अितिहास में कोअी भी महत्त्वपूर्ण काम बिना खून बहे हुआ है ?

कुछ आदमी (अेक साथ)—कभी नहीं, कभी नहीं।

नवाँ—फिर यह महान् कार्य बिना खून बहे कैसे हो सकता है ? लेकिन जब मैं खून बहाने की बात करता हूँ, तब यह भी बता देना चाहता हूँ कि किसका खून बहाना है।

अेक व्यक्ति—(बीच ही में)—उनका ही न जिनके शरीरों का खून दूसरों का खून चूसने के कारण बढ़ा है ?

नर्वो—बेशक, अुन्हींका। हाँ, अुनके खून के साथ हमें भी अपना खून बहाने को तैयार होना होगा। जो सद्सिद्धान्तों की रक्षा करना चाहते हैं, जो दुनिया के शोषण और दलन को समाप्त करना चाहते हैं, अुनका युद्ध और क्रान्ति की चण्डी के खप्पर पर अशुद्ध और पातकी खून के साथ ही शुद्ध और पुण्यमय खून भी चढ़ता है।

अेक व्यक्ति—ठीक, ठीक कह रहे हैं आप।

नर्वो—संसार में मानव का सर्वश्रेष्ठ स्थान अुसकी ज्ञानशक्ति का कारण है। अिसीलिए कोअी भी विचारपूर्ण सामूहिक कृति मनुष्यों में होती है, अन्य प्राणियों में नहीं।

अेक व्यक्ति—ठीक।

नर्वो—किसी भी क्रान्ति का जन्म दार्शनिक विचार के रूप में स्वागत होता है। जब हम दार्शनिक विचार के कार्यक्रम में परिणत होने का मौका आता है, तब सशस्त्र शक्ति की उत्पत्ति होती है। अिसी शक्ति के द्वारा मानव-समाज उत्तरोत्तर उन्नति के सोपान पर चढ़ता जाता है। बाधाओं के रोड़े भी आते हैं। यह शक्ति अुन रोड़ों को चूर-चूर करती हुअी आगे बढ़ती है। जो सच्चे मर्द हैं, वे अिस यात्रा में भाग लेंगे।

अधिकांश लोग—(अेक साथ) हम मर्द हैं मर्द।

नर्वो—तो अपने खून से प्रतिज्ञा लीजिये कि हम अिन शोषण करने-वालों का खून बहायेंगे। और हम क्रान्ति के सफल करने में अगर अपने खून की जरूरत होगी, तो सहर्ष अपना भी बलिदान कर देंगे। तेलंगाने में जो जोते नहीं अुनके पास जमीन न रहेगी। न अुनकी जमीन जोतनेवालों से छिनेगी और अगर सरकार हमारी अिस क्रान्ति के मार्ग में रोड़ा बनकर आयेगी, तो अुस रोड़े को भी चूर-चूर कर हम अपनी यात्रा में आगे बढ़ेंगे।

कुछ व्यक्ति—(अेक साथ) तो लाअिये, हम खून से प्रतिज्ञा लिखने को तैयार है।

लघु यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान—मध्यप्रदेश के वर्धा जिले मे पवनार गॉव का परमधाम आश्रम।

समय—उष:काल

[विनोबाजी अेक तख्त पर बैठे हुअे है। सामने जमीन पर स्त्री पुरुषो का अेक छोटा सा समुदाय अुपस्थित है।]

[अेक व्यक्ति खडा हो विनोबाजी की अोर बढ़ता है]

अेक व्यक्ति—(विनोबाजी के पैरो पर सिर रखते हुअे) त्राहि-त्राहि आचार्य !

विनोबाजी—(पीठ थपथपाते हुअे) अुठो, अुठो, कहाँ से आये हो आप लोग ? क्या सकट है ?

अेक व्यक्ति—तेलगाने के नल्गुडा से आये है, हम लोग।

दूसरा व्यक्ति—महान् आपत्ति आयी है हम लोगों पर !

विनोबाजी—बैठो, बैठो, बताओ कैसा सकट, कैसी आपत्ति ?

अेक व्यक्ति—महाराज, हम दोनों का सारा कुटुम्ब—पत्नी, पाँच बच्चे · ·

दूसरा व्यक्ति—निर्दोष पत्नी, महाराज · · · · · · नन्हे-नन्हे कमल के सदृश बच्चे · ······

(दोनो रोने लगते है)

विनोबाजी—हाँ क्या · · · · · क्या हुआ तुम्हारी पत्नियो को · · · · · तुम्हारे बच्चों को ?

पहला—दुष्टों ने मार डाला, भगवन्! (और जोर से रोने लगता है) छुरियाँ भोंक-भोंककर, घाव कर-कर, अंग-अलग काट-काटकर मार डाला, आचार्य! (सिसकने लगता है)

विनोबा—शान्त हो, बन्धुओ, शान्त हो। किसने मार डाला क्यों मार डाला? पूरा हाल बताओ।

पहला—साम्यवादियों ने, देव! हमारी जमीन के लिये।

विनोबा—अच्छा, समझा। कुछ दिनों से तेलगाने से इसी तरह की खबरें मिल रही हैं। भूमिहीन भूमिपतियों की जमीनों पर कब्जा करने के लिए वहाँ मार-काट कर रहे हैं। आपका कुटुम्ब भी इसीका शिकार हो गया।

दूसरा—पर महाराज, भूमिपतियों ने किसीकी भूमि चोरी कर या डाका डालकर हरण नहीं की है। कानून के अनुसार वे जमीन के मालिक हैं।

पहला—और फिर, आचार्य, बेचारी स्त्रियाँ और नन्हे-नन्हे बच्चे तो उस जमीन के मालिक भी न थे। आह! किस तरह .... किस क्रूरता से मारा गया है उन्हें!

विनोबा—मैंने सुना, वहाँ अनेक घरों और कुटुम्बों का यही हाल हुआ है।

पहला—हजारों घरों और कुटुम्बों का आचार्य। सरकारी आँकड़ों के अनुसार आहतों की संख्या तीन हजार है, पर यथार्थ में दस हजार के भी ऊपर है!

पहला—और करोड़ों रुपया खर्च करने पर भी सरकार स्थिति को काबू में न ला सकी।

दूसरा—हाँ, साम्यवादी भूमिपतियों को मार-काटकर उनकी भूमि ले, जिनके पास भूमि नहीं है, उनको देते हैं। जब सरकार को इसकी खबर मिलती है, सरकारी पुलिस और फौज वहाँ पहुँच उनसे भूमि छीन, फिर से उनकी

कुछ व्यक्ति—(अेक साथ) तो लाअिये, हम खून से प्रतिज्ञा लिखने को तैयार है।

लघु यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान—मध्यप्रदेश के वर्धा जिले मे पवनार गॉव का परमधाम आश्रम।

समय—उष काल

[विनोबाजी अेक तख्त पर बैठे हुअे है। सामने जमीन पर स्त्री पुरुषो का अेक छोटा सा समुदाय अुपस्थित है।]

[अेक व्यक्ति खड़ा हो विनोबाजी की ओर बढता है]

अेक व्यक्ति—(विनोबाजी के पैरों पर सिर रखते हुअे) त्राहि-त्राहि आचार्य!

विनोबाजी—(पीठ थपथपाते हुअे) अुठो, अुठो, कहॉ से आये हो आप लोग? क्या सकट है?

अेक व्यक्ति—तेलगाने के नल्गुडा से आते है, हम लोग।

दूसरा व्यक्ति—महान् आपत्ति आयी है हम लोगो पर!

विनोबाजी—बैठो, बैठो, बताओ कैसा सकट, कैसी आपत्ति?

अेक व्यक्ति—महाराज, हम दोनों का सारा कुटुम्ब—पत्नी, पॉच बच्चे

दूसरा व्यक्ति—निर्दोष पत्नी, महाराज ······ नन्हे-नन्हे कमल के सदृश बच्चे ·······

(दोनों रोने लगते है)

विनोबाजी—हॉ क्या······क्या हुआ तुम्हारी पत्नियों को ······ तुम्हारे बच्चों को?

पहला—दुष्टों ने मार डाला, भगवन्! (और जोर से रोने लगता है) छुरियाँ भोंक-भोंककर, घाव कर-कर, अंग-प्रत्यंग काट-काटकर मार डाला, आचार्य! (सिसकने लगता है)

विनोबा—शान्त हो, बन्धुओ, शान्त हो। किसने मार डाला क्यों मार डाला? पूरा हाल बताओ।

पहला—साम्यवादियों ने, देव! हमारी जमीन के लिअे!

विनोबा—अच्छा, समझा। कुछ दिनो से तेलगाने से इसी तरह की खबरें मिल रही हैं। भूमिहीन भूमिपतियों की जमीनों पर कब्जा करने के लिए वहाँ मार-काट कर रहे हैं। आपका कुटुम्ब भी अिसीका शिकार हो गया।

दूसरा—पर महाराज, भूमिपतियों ने किसीकी भूमि चोरी कर या डाका डालकर हरण नहीं की है। कानून के अनुसार वे जमीन के मालिक हैं।

पहला—और फिर, आचार्य, बेचारी स्त्रियाँ और नन्हें-नन्हें बच्चे तो अुस जमीन के मालिक भी न थे। आह! किस तरह .... किस क्रूरता से मारा गया है अुन्हें!

विनोबा—मैंने सुना, वहाँ अनेक घरों और कुटुम्बों का यही हाल हुआ है।

पहला—हजारों घरों और कुटुम्बों का आचार्य। सरकारी आँकड़ों के अनुसार आहतों की सख्या तीन हजार है, पर यथार्थ मे दस हजार के भी अूपर है!

पहला—और करोड़ों रुपया खर्च करने पर भी सरकार स्थिति को काबू मे न ला सकी।

दूसरा—हाँ, साम्यवादी भूमिपतियों को मार-काटकर अुनकी भूमि ले, जिनके पास भूमि नहीं है, उनको देते हैं। जब सरकार को अिसकी खबर मिलती है, सरकारी पुलिस और फौजें वहाँ पहुँच अिनसे भूमि छीन, फिर से जिनकी

भूमि थी, अुन्हे देने की कोशिश करतो है। पर वे भूमि स्वामी या तो मर चुके होते है या भाग गये होते है। न भूमि पुराने स्वामियों के पास रह पाती है और न नयो के।

पहला—महाराज, सारा तेलगाना जन और धन दोनो दृष्टियो से अल्प समय मे ही अुजड़ गया है।

दूसरा—लोग जान हथेली पर रखे भाग रहे है। सारा क्षेत्र आर्तनाद से गूँज रहा है। आहतो के प्रतिनिधि रूप हम आपकी सेवा मे आये है। आप तेलगाने का त्राण करें।

विनोबा—(कुछ आश्चर्य से) मै ? मै इस सबंध मे क्या कर सकूँगा बन्धुओ ?

(विनोबाजी का सिर झुक जाता है। सब लोग विनोबाजी की ओर देखते है। कुछ देर निस्तब्धता)

दूसरा—देखिये, महाराज, सर्वस्व स्वाहा होने पर भी हम लोग हृदय पर पत्थर रख अितनी दूर आपकी सेवा मे अिसलिए आये है कि आप हमारी रक्षा के लिअे कुछ अुपाय करेंगे।

पहला—महात्मा गाधी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह के समय आपको प्रथम सत्याग्रही का पद दे अपना प्रथम शिष्य घोषित किया था। अुनके अुसूलो को कार्यरूप मे परिणत करने के लिअे अगर आज कोअी भी व्यक्ति अधिकारी माना जा सकता है तो आप।

दूसरा—और आप यह भी समझ लें कि तेलगाने के अिस प्रलयकारी काड का खात्मा कोअी भी सरकारी ताकत न कर सकेगी और सारे देश मे प्रलय का ताडव होगा। नर-रक्त से भारत-भूमि प्लावित हो जायगी। आर्तो के आर्तनाद से कानों के पर्दे फटने लगेंगे। शांति और समृद्धि जैसी कोअी चीज कहीं न दिखायी पड़ेगी।

(कुछ देर निस्तब्धता। विनोबाजी सिर झुकाये विचार-मग्न है। सब लोग अेकटक अुनकी ओर देखते है।)

विनोबा—(सिर अुठाते हुअे) मैं नहीं जानता कि मैं तेलंगाने मे कुछ कर सकूँगा कि नहीं, पर अिस परिस्थिति मे यहाँ चुपचाप बैठा रहूँ, यह भी सम्भव नहीं। मैं तेलगाने चलूँगा।

जन-समुदाय—महात्मा गाधी की जय! सन्त विनोबा की जय!

विनोबा—(तेलंगाने के दोनो व्यक्तियों से) और देखो, बन्धुवर, मैं तेलंगाना पैदल चलूँगा।

(पुन: जयजयकार)

लघु यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान—तेलगाने में पोचमपल्ली गाँव, समय—सन्ध्या।

[गाँव के बाहर अेक मैदान में जन-समुदाय अेकत्रित है। जन-समुदाय में चर्चा चल रही है]

अेक—अिस जमाने में जब यातायात के अितने शीघ्रगामी साधन है...

दूसरा—(बीच ही में) हाँ, सारी दुनिया का कुछ घंटों में ही वायुयान द्वारा चक्कर लगाया जा सकता है.....

पहला—ठीक, अैसे जमाने मे यह सन्त विनोबा मध्यप्रदेश के वर्धा से हमारे तेलगाने के अिस पोचमपल्ली तक पैदल आया है.....पैदल।

तीसरा—जब यातायात के अितने शीघ्रगामी साधन हैं, तब पैदल चलने की आवश्यकता क्या है?

दूसरा—बारीक बाते मोटी-समझ मे नहीं आ पातीं।

(जन-समुदाय का अट्टहास)

चौथा—(तीसरे से) भाअी, पैदल यात्रा से जैसा जन-संपर्क होता है.....

पाँचवाँ—(बीच ही में) हाँ, जनता के सुख-दुःख, जनता की भावनाएँ आदि का जिस प्रकार पता लगता है, रेल और वायुयान आदि सवारियों पर चलने से कभी लग सकता है ?

तीसरा—(रूखे स्वर से) तो क्या विनोबाजी को अिस पैदल यात्रा से अैसी बातों का पता लगा है, जो सवारी पर आने से न लगता ?

कुछ व्यक्ति—(अेक साथ) बेशक, बेशक। विनोबाजी तेलगाने की भूमि समस्या को हल कर यहाँ की मारकाट को रोकने ही आये हैं न ?

एक व्यक्ति—और काहे को आये हैं ?

तीसरा—ठीक कहा आपने। तो अब यह देखना है कि वे यहाँ शांति कैसे कायम कर पाते हैं।

छठा—हाँ, यह सरल बात नहीं है। जो काम अपनी पुलिस और फौज पर करोड़ों रुपया खर्च कर सरकार नहीं कर पायी, अुस काम को मुट्ठी भर हड्डियों का यह दुबला पतला आदमी कैसे करेगा, यह देखने की ही चीज होगी।

[विनोबाजी का कुछ साथियों के संग प्रवेश। विनोबाजी के आगमन के पहले से अुपस्थित जो जन-समुदाय था, वह खड़ा हो जाता है। अिनमें से कअी लोग विनोबाजी के पैर छूने का प्रयत्न करते हैं।]

विनोबा—बैठिये आप लोग। सब बैठ जाअिये। तो आप लोगों के सारे कष्ट दूर हो जायेंगे, अगर आपको चालीस अेकड़ सूखी और चालीस अेकड़ सिंचाअी की भूमि मिल जायगी ?

कुछ व्यक्ति—(खड़े हो, हाथ जोड़कर अेक साथ) हाँ, महाराज।

[विनोबाजी विचार-मग्न हो जाते हैं। सारा जन-समुदाय अेकटक कभी विनोबाजी की ओर और कभी अिन खड़े हुये लोगों की ओर देखता है। कुछ देर निस्तब्धता]

विनोबा—(दामोदरदास मूँदड़ा से) नोट करो, दामोदर, अिन लोगों

की आवश्यकताएँ। यह जमीन तो सरकार से ही मिल सकती है।

दामोदरदास—(नोट करते हुअे) परन्तु सरकारी कामो मे जैसी देर लगती है, वह तो आप जानते ही हैं।

विनोबा—(विचारते हुअे) हाँ, सो तो मै क्या, सभी जानते हैं, पर और उपाय ही क्या है? मेरे पास तो जमीन है नहीं। जिनके पास है, वे क्या देनेवाले है?

रामचन्द्र रेड्डी—(खडे होकर) अगर आप मजूर करे, तो मै अपनी जमीन मे से यह जमीन देने को तैयार हूँ।

(सब लोग अवाक्-से रामचन्द्र रेड्डी की ओर देखते हैं।)

विनोबा—(गला साफ करते हुअे, कुछ आश्चर्य भरे हुअे स्वर में) आप .... ..आप यह जमीन अपनी जमीन में से देने को तैयार हैं?

रामचन्द्र रेड्डी—हाँ, महाराज, अितनी ही नहीं, अिससे भी कुछ ज्यादा। ये लोग चालीस अेकड भूमि सूखी और चालीस अेकड़ सिंचाअी की जमीन चाहते है न? मै पचास अेकड़ सूखी और पचास अेकड़ सिंचाअी की जमीन देता हूँ।

विनोबा—आपका शुभ नाम?

रामचन्द्र रेड्डी—मुझे रामचन्द्र रेड्डी कहते हैं।

विनोबा—(कुछ गद्गद स्वर से) आपने दान का अेक महान् आदर्श अुपस्थित किया है। धन्य है आपको।

सब लोग—महात्मा गाधी की जय! सन्त विनोबा की जय!

कुछ व्यक्ति—रामचन्द्र रेड्डी की जय!

विनोबा—रेड्डीजी, आपके समान ही अगर भूमिपति भूमिदान के लिअे आगे आवें तो तेलगाने का ही नहीं, तमाम देश की भूमि का सवाल हल हो सकता है। गाधीजी ने कहा था, "अधिकाश जमींदार खुशी से अपनी जमीन छोड देंगे," पर जब वर्धा से मै तेलगाने के लिअे रवाना हुआ, तब मुझे यह उम्मीद नहीं थी कि वह समय आ पहुँचा है। कल का

जो रास्ता कम्युनिस्टों ने यहाँ अख्त्यार किया, वह अुन्होंने रूस से सीखा है, पर यह बात हिन्दुस्तान में चलनेवाली नहीं है। नलगुडा में यह मार्ग बहुत अपनाया गया, लेकिन अिसका कोअी अच्छा नतीजा नहीं निकला। तेलगाना ने हिंसा की व्यर्थता सिद्ध कर दी। यहाँ हिंसा तथा कानून दोनों नाकामयाब रहे। जब मैं वर्धा से चला, तब भी यह सब तो जानता था, पर अिसका हल मुझे नहीं सूझ पड़ता था। रेड्डीजी, आपने अिसका हल मुझे सुझा दिया। अब मैं दूसरों से भी यह दान माँगूँगा और जो भूमि मुझे मिलेगी, वह मैं भूमिहीनों को बाँट दूँगा। देखता हूँ, मेरा यह प्रयोग कहाँ तक कामयाब होता है।

[एक व्यक्ति गाता है]

गीत

अिस धरती पर लाना है,
हमें खींचकर स्वर्ग, कहीं यदि अुसका ठौर ठिकाना है,
अिस धरती पर लाना है।
यदि वह स्वर्ग कल्पना ही हो,
यदि वह शुद्ध जल्पना ही हो,
तब भी हमें भूमि माता को अनुपम स्वर्ग बनाना है,
जो देवोपम है अुसको ही अिस धरती पर लाना है।
सन्त विनोबा की वर वाणी,
यदि सुन सकें द्विपद हम प्राणी,
तो देखेंगे धरा बन गयी अुन्नत स्वर्ग समाना है,
देव कहेंगे स्वयं कि अुनसे अच्छा नर का बाना है।*

लघु यवनिका

---

* श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' कृत।

चौथा दृश्य

स्थान—नलगुडा, समय—अर्ध रात्रि।

[साम्यवादियो की पहले के सदृश ही गुप्त बैठक हो रही है]

एक—हाँ, अजीब देश है यह।

दूसरा—अेकदम अजीब! शायद किसी देश मे भी दान मे जमीन अिस तरह नहीं मिल सकती, जैसी अिस देश में मिल रही है।

तीसरा—पर, भाअी, तुम लोग समझते हो कि अिस देश में भी दान मे जमीन मिलनेवाली है?

कुछ व्यक्ति—(अेक साथ) यह तो अब देखने की बात है।

तीसरा व्यक्ति—देख लेना। मै कहता हूँ, अिस देश मे भी दान मे जमीन कभी नहीं मिलेगी। तेलगाने मे क्यों मिली और क्यों मिल रही है, जानते हो? अिसलिअे कि हमने सारे तेलंगाने मे अेक तहलका मचा दिया था। न किसीकी जमीन सुरक्षित थी, न जान।

चौथा—तो यहाँ पर 'रपट पड़े तो हर गगा' वाली कहावत चरितार्थ हो रही है।

तीसरा—बेशक। बात यह है कि दुनिया मे वैज्ञानिक चीजें ही सफल हो सकती हैं। राज्य पलटते है युद्धों से और समाज का आर्थिक सगठन बदलता है क्रान्तियों से।

पाँचवाँ—पर, भाअी, अब तो अिस भूमि-दान के सबध मे भी अेक वैज्ञानिक शास्त्र तैयार हुआ है और अिसे अहिंसक क्राति कहा जा रहा है।

तीसरा—मैंने अुस शास्त्र को देखा है और अिस नाम को भी सुना है। वह वैज्ञानिक शास्त्र नहीं, महा अवैज्ञानिक शास्त्र है और भूदान के कार्य को क्राति कहना तो क्राति की खिल्ली उड़ाना है। हाँ, सच्ची क्राति के मार्ग का यह बड़ा भारी रोड़ा अवश्य है।

पाँचवाँ—रोड़ा! कैसे?

तीसरा—देखो, तेलगाने मे हमने भूमि-वितरण के विषय में अेक वैज्ञानिक कदम उठाया था।

चौथा—और हमें अिसमें सफलता भी कम नहीं मिली।

तीसरा—पूरी सफलता मिली। कितने थोडे वक्त मे, कैसे अल्प साधनो के रहते हुअे हमने अपने अुस दिन के फैसले के अनुसार कितने भूमिपति नरपिशाचो का खून क्राति की चण्डी के खप्पर पर चढाया। हमारा भी कुछ खून बहा, पर अुसे बहाने का अुन कायर नर-पिशाचो को साहस न हुआ। वह बहाया शोषणकर्ताओं की सरकारी पुलिस और फौज ने।

चौथा—हॉ, हम ठीक रास्ते पर चल रहे है। अुसी रास्ते पर, जिस रास्ते पर फरासीसी, रूसी और चीनी क्रातिकारी चले थे।

तीसरा—लेकिन अेकाअेक यह भूमिदान का रोडा हमारे रास्ते मे आ गया और अब सबसे पहले हम अिसे चकनाचूर करना होगा।

चौथा—बात यह है कि अिस देश मे लोग वैज्ञानिक ढग से चीजों को सोच ही नहीं सकते।

तीसरा—भाअी, अधिकाश लोग है निरक्षर भट्टाचार्य। रूस और चीन का भी यही हाल था। वहॉ के वैज्ञानिक विचारको ने जो किया, वही हमे भी करना होगा।

पाँचवाँ—पर, अगर समस्या बिना रक्तपात के सुलझायी जा सके तो ·······

तीसरा—(आश्चर्य से पाँचवे की ओर घूरते हुअे बीच ही मे) अच्छा। तो अब हमारे साथी भी डगमगाने लगे है ?

पाँचवाँ—(सहमते हुअे) नहीं, डगमगाने की बात नहीं है, मगर अगर भूमिदान का यह आन्दोलन कामयाब हो सकता है तो···

तीसरा—(फिर बीच ही में अुत्तेजना भरे स्वर में) अगर-मगर-लेकिन की हमारे क्रांतिकारी मार्ग मे कोअी जगह नहीं है। यह भूमिदान हमारी क्रांति के रास्ते का सबसे बड़ा रोडा है।

पाँचवाँ—(सकुचते-सकुचते) तो फिर मेरा स्तीफा ले लीजिये।

तीसरा—(उत्तेजना से) अैसा?

पाँचवाँ—(अब दृढ़ता से) जी हाँ, अब तक मैंने आप लोगों का साथ देने में कोई कोर-कसर न रक्खी। मैंने अुन नरपिशाच भूमिपतियों, अुनकी स्त्रियों, अुनके बच्चों को शायद सबसे अधिक मौत के घाट अुतारा होगा। जिसे मैंने अपना कर्तव्य समझा था, अुसे पालने में मेरा कलेजा हमेशा पत्थर का रहा। लेकिन अगर और कोअी रास्ता अिस भीषण रक्तपात को रोक सकता है, तो अुससे प्रयोग के होने तक हमें अपना यह काम बन्द रखना चाहिअे। यदि भूदान यज्ञ सफल नहीं होता है, तो हमारा रास्ता खुला हुआ ही है, हम फिर उस पर चलेंगे।

तीसरा—(अत्यंत क्रोध से) कायर कहीं का!

[उसी समय अेक व्यक्ति पाँचवें आदमी पर पिस्तौल तान गोलियाँ चलाता है। छटपटाकर उसकी मृत्यु हो जाती है [कुछ देर सन्नाटा]

तीसरा—(गम्भीरता से) ठीक हो गया। हमारे समुदाय में अिस प्रकार स्तीफा नहीं दिया जा सकता, जैसा यह भाअी देना चाहता था। हमने अपने खून से प्रतिज्ञापत्र भरे हैं। असमानता का पाप भीषण से भीषण पाप है। उसके मोचन के लिअे खून का बलिदान अनिवार्य है। बोलिये—क्रान्ति अमर हो!

सारा समुदाय—(एक साथ) क्रांति अमर हो!

एक व्यक्ति—देखिये, साथियो, अब मैं अेक बात जरूरी मानता हूँ कि हम अेक अपना नेता चुनें, जिसकी आज्ञा से हमारा आगे का तमाम काम चले। मैं प्रस्ताव करता हूँ कि हमारे दल के नेता (तीसरे की ओर संकेत कर) रुद्रदत्तजी बनाये जायँ।

दूसरा व्यक्ति—मैं अिस प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ।

सारा समुदाय—रुद्रदत्त जिन्दाबाद!

रुद्रदत्त—मेरे प्रति अिस विश्वास के व्यक्त करने पर मैं आप सबको हृदय से धन्यवाद देता हूं। मुझे पूरा विश्वास है कि आप सबके सहयोग से हम अपने ध्येय मे कामयाब होकर रहेंगे और हमारी क्राति के रास्ते का अिस वक्त का सबसे बड़ा रोड़ा जो यह भूमिदान-यज्ञ है, उसे जल्दी-से जल्दी चूर-चूर कर आगे बढ़ेंगे। क्राति अमर हो!

सब—(जोर से) क्राति अमर हो!

यवनिका

दूसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान—बिहार प्रांत में गया नगर, समय—सन्ध्या।

[एक मैदान में सार्वजनिक सभा का आयोजन है। नर-नारियों और बच्चों का बृहत् जन-समुदाय उपस्थित है।]

गायकों में से एक—सन्त विनोबा का भाषण शुरू होने के पहले आपके बिहार प्रांत के ही प्रसिद्ध कवि "दिनकर" का भूदान संबंधी अेक गीत गाया जाता है।

[वाद्य के साथ गीत गाया जाता है]

गीत

१

सुरम्य शान्ति के लिअे, जमीन दो, जमीन दो,
महान् क्रांति के लिअे जमीन दो, जमीन दो।
जमीन दो कि देश का अभाव दूर हो सके,
जमीन दो कि द्वेष का प्रभाव दूर हो सके,
जमीन दो कि भूमिहीन लोग काम पा सकें,
उठा कुदाल बाजुओं का जोर आजमा सकें,
महा विकास के लिअे जमीन दो, जमीन दो,
नये प्रकाश के लिअे जमीन दो, जमीन दो।

२

जमीन दो कि शान्ति से नया समाज ला सकें,
जमीन दो कि राह विश्व को नयी दिखा सकें।

जमीन दो कि प्रेम से समत्व सिद्धि पा सकें,
जमीन दो कि दान से, कृपाण को लजा सकें।

सुरम्य शान्ति के लिए जमीन दो, जमीन दो,
महान् क्रांति के लिए जमीन दो, जमीन दो।

वह व्यक्ति—अब मैं बिहार के सभी दलों और समुदायों की ओर से सन्त विनोबाजी से प्रार्थना करता हूँ कि वे अपना भाषण आरम्भ करें।

विनोबा—(चरखा कातना बन्द कर गला साफ करते हुअे) बहनो और भाअियो! तेलगाने के काम के बाद यद्यपि मैं और भी कअी प्रान्तों में गया, तथापि आपके सूबे बिहार को अब मैं भूदान के काम में सबसे प्रधान स्थान देनेवाला हूँ। आपका प्रांत धन्य तो कअी दृष्टियों से है। अिसी प्रांत में राजा जनक राज्य करते थे, जिनकी निस्पृहता की वजह से देह रखते हुअे भी अुन्हें विदेह की पदवी प्राप्त हुअी थी। यहीं भगवान् बुद्ध ने निर्वाण का सच्चा रहस्य जाना था। अिसी प्रान्त में प्राचीन भारत के मौर्यवंश, गुप्तवंश आदि अनेक राजवंशों का अुत्कर्ष हुआ था। अिसी प्रान्त में शेरशाह सूरी का अुत्कर्ष हुआ था, जो हिन्दू मुस्लिम अेकता के और शासकीय कार्यों के महान् आदर्श माने जाते हैं। अैसे प्रान्त की सारी भूमि-समस्या को मैं भूमिदान से हल कर तमाम मुल्क में अिस सूबे के काम को अेक आदर्श का रूप देना चाहता हूँ। भाअियो! जब तेलगाने में मैंने अिस काम को शुरू किया और वहाँ मुझे काफी जमीन मिलने लगी तब मेरे कान पर अेक बात आयी। कुछ साम्यवादी कहते सुने गये कि तेलगाने में जमीन अिसलिअे मिल रही है कि साम्यवादियों ने मार-काट के जरिये अैसा वायुमण्डल बना दिया है कि लोग अपनी अपनी जमीन से अपना पिंड छुड़ाना चाहते हैं।

जन-समुदाय—अेकदम गलत।

विनोबा—हाँ, बाद में तो यह बात अिसलिअे गलत सिद्ध हुअी कि मुझे दूसरे स्थानों में तेलगाने से भी ज्यादा भूमि मिली, लेकिन जब तक

यह नहीं हुआ था, तब तक तो साम्यवादियों का कहना गलत है, इसका मैं कोअी प्रमाण न दे सकता था।

अेक व्यक्ति—पर अब तो दे सकते है।

विनोवा—हॉ, अब जरूर दे सकता हूँ। बात यह है कि मैंने कभी माना ही नहीं कि मारकाट से अिस देश की कोअी समस्या हल हो सकती है। अब आपके सूबे मे जमीन का सवाल बिल्कुल हल कर मै मुल्क और दुनिया को बता देना चाहता हूँ कि अैसे सवालो को हल करने का सबसे अच्छा तरीका हृदय-परिवर्तन ही है। देखिये, अगर समाज-रचना में फौरन परिवर्तन नहीं होता है, तो हम नष्ट हो जायॅगे। दूसरे मुल्कों ने जिस प्रकार जमीन का सवाल हल किया वह हमारे देश के लिअे अिष्ट नहीं है। आज सामाजिक असन्तोष और आर्थिक विषमता के जाल में हिन्दुस्तान फॅस गया है। अिनमें से सही सलामत निकलने के लिअे ही यह भूदान-यज्ञ आन्दोलन है, जो भारत की प्रकृति के अनुकूल है।

जन-समुदाय—भूदान-यज्ञ सफल हो।

विनोवा—महाभारत मे 'राजसूय यज्ञ' का वर्णन है और मेरा यह 'प्रजासूय यज्ञ' है। अिसमें प्रजा का अभिषेक होगा। अैसा राज, जहॉ मजदूर, किसान, मत्री आदि सब यह समझें कि हमारे लिअे कुछ हुआ है। अैसे समाज का नाम 'सर्वोदय' है। वहीं से प्रेरणा लेकर मै घूम रहा हूँ। आप जानते है कि मै सर्वोदय समाज का सेवक हूँ। सर्वोदय का नाम मेरे लिअे भगवान् का नाम है। पहले पहल लगता था कि अिसका परिणाम वातावरण पर क्या होगा—थोड़े से अमृत बिन्दुओं मे सारा समुद्र कैसे मीठा होगा? पर धीरे-धीरे विचार बढता गया। परमेश्वर ने मेरे शब्दों मे कुछ शक्ति भर दी, लोग समझ गये कि यह जो काम चल रहा है, क्रान्ति का है और सरकार की शक्ति के परे है। यद्यपि यहाँ लोगों ने अिस बात को समझ लिया है कि क्रान्ति टल नहीं सकती, मगर चीन तथा रूस मे जैसी क्रान्ति हुअी है, वैसी वे

सम्पूर्णदास—बात यह है कि आरम्भ में किसीने सोचा ही न था कि यह आन्दोलन अितना बड़ा रूप लेगा। हम लोगों को पब्लिसिटी की कला भी नहीं मालूम।

जवाहरलाल—आप ही लोगो को नहीं, हिन्दुस्तान मे यह आर्ट शायद ही कुछ लोगों को मालूम हो। हिन्दुस्तान की सरकार और सूबों की सरकारें भी जो काम कर रही है, अुनकी जानकारी भी अिस मुल्क और दूसरे मुल्कों मे कितने लोगो को है?

दूसरा व्यक्ति—मगर, पडितजी, हमे भी प्रचार की आवश्यकता है। अपने देश तथा विदेशों के लोगों को जानना चाहिअे कि हमारे देश मे भी क्या-क्या हो रहा है।

जवाहरलाल—ठीक कहते है आप, बिना अिसके बड़ी गलतफहमियाँ भी हो रही है। पर अिसमे कअी दिक्कतें जो है।

(कुछ देर निस्तब्धता)

जवाहरलाल—(हाथ-घड़ी देखते हुअे) हाँ, शुरू कीजिये।

गया जिला जेठीमन ग्राम का एक प्रसग

हृदय की गहराअी से जयप्रकाशजी बोल रहे है। बीस दाताओं से अेक सौ पचास अेकड़ के दान पत्र भरे गये, तो जयप्रकाशजी ने पूछा, "क्या अिस भगवान् बुद्ध के क्षेत्र मे बीस ही दानी है? अैसा नहीं हो सकता।" अुनकी अिस नम्र मूर्ति को दान की याचना करते देखकर लोग रोमाचित हो गये।

वजीरगज का एक वाकया

भागवत पाडे खड़े हुए और उन्होने तीन बीघा भमि दान जाहिर किया। दूसरे अेक सज्जन ने तुरन्त अुठकर कहा, "१९३० मे पाडेजी ने राष्ट्र के लिअे असीम त्याग किया है। जो कुछ बाकी था, वह भी अब भारत माता के चरणो मे अर्पण कर दिया। अिनके बाल बच्चो की फिक्र अिन्हे भले ही न

हो, हमे जरूर है। मैं पांडेजी को अपनी जमीन मे से पॉच बीघे देता हूँ।"
जयप्रकाशजी की ऑखों मे ऑसू भर आये।

रॉंची जिले का अेक अपूर्व दान

सन् '४२ की १५ जून को बिहार के सर्वोच्च स्थान नेतरहाट में पाल-कोट के राजा साहब कदर्पलाल शाह देव ने सुन्दर कमल पुष्पों की माला के साथ ४५७३२ अेकड़ भूमि का दान-पत्र विनोबाजी को समर्पित किया। राजा साहब का, जो रॉंची भूदान समिति के सयोजक भी हैं, ४४५०० अेकड़ का दान-पत्र भी उसीमें सम्मिलित किया गया था। उन्होंने अपनी सारी पड़ती जमीन और काश्त की जमीन के छठे हिस्से अर्पित करते हुअे कहा कि "मुझे सयोजक बनाकर आपने मुझ पर बहुत उपकार किया है।" इसका जिक्र करते हुअे विनोबाजी ने कहा, "पालकोट के राजा साहब का दान 'पूर्ण दान' है। अिसलिअे नहीं कि वह बड़ा दान है, बल्कि अिसलिअे कि उन्होंने बिल्कुल ठीक ढग से दान दिया है। उन्हें सयोजक का पद देने के लिअे अुन्होंने हमारा उपकार माना है। हमारा याने गरीबों का, जिसके हम प्रतिनिधि हैं और जमीन पर वास्तव मे उनका हक ही है। अिसलिअे वे अगर जमीनवालों से दान स्वीकार करते है, तो वास्तव मे जमीनवालों पर उपकार ही करते हैं। गरीबों की जमीनें उन्हें लौटाना जमींदारों का कर्तव्य है।"

रविशंकर महाराज का गुजरात का अनुभव

अेक गॉव मे अेक ब्राह्मण स्त्री कहने लगी, 'महाराज, मुझे जमीन देनी है। मेरे घर पधारियेगा।' स्त्री मुझे अपने घर ले गयी। भोजन कराया और चार बीघा जमीन का दान दिया। अितने में बाहर से आवाज आयी 'मेरी पौन बीघा जमीन लेंगे?' मैने कहा, 'अन्दर आओ अन्दर आओ।' परन्तु वह चमार था। कहने लगा, 'अन्दर नहीं आ सकता।' मुझे याद नहीं रहा और मै आग्रह करता रहा। परन्तु वह ब्राह्मण के घर पर कैसे आ सकता था? वह तो बाहर खड़ा-खड़ा पूछता रहा,

'जमीन लेंगे ?' मैंने अुसका हाथ पकड़कर घर में खींच लिया। मुझे खयाल नहीं रहा। स्त्री तो कुछ बोली नहीं। ब्राह्मण का घर। पूर्णतया सनातनी। घर में सन्ध्या, गायत्री आदि का पाठ होता था। अैसे सनातनी के घर में मैंने चमार को दाखिल किया।

अेक हरिजन का सर्वस्व दान

सहयोगी गौतम बजाज, मगरू नामक अेक हरिजन भाअी को विनोबाजी के पास ले आये। विनोबाजी के कमरे में मिलनेवालों की भीड़ लगी थी। अुनमें कोअी जमींदार थे, कोअी मालदार, कोअी मिलदार थे। गौतम भअिया ने शिकायत की "बाबा, अिस भाअी के पास केवल अिक्कीस डिसमल जमीन है। बहुत समझाने पर भी नहीं मानते हैं और सबकी सब देना चाहते हैं।" सर्वस्व समर्पण करनेवाले अपने अिस महान् दाता की ओर विनोबाजी ने कृतज्ञता भरी प्रसाद-मुद्रा से देखा। अुस भाअी ने विनोबाजी के चरण पकड़ लिये और कहा "महात्माजी, मेरी यह तुच्छ भेंट स्वीकार कर लीजिये।"

"फिर तुम्हारे लिअे तो कुछ भी नहीं रहेगा ?"

"आखिर मुझे अुस कारखाने की नौकरी तो करनी ही पड़ती है। अितनी जमीन से मेरा निर्वाह नहीं होता। घर में पाँच-सात आदमी हैं। आज अुस जमीन में क्या होता है ? कुछ धान बोया था वह निकाल लिया है।"

"तुम्हारी भावना देखकर मुझे खुशी होती है, परन्तु अिसे रहने दो।" लेकिन बहुत समझाने पर भी वह नहीं माना। "मैंने देने का निश्चय कर लिया है। मुझ पर कृपा कीजिये।" तब विनोबाजी ने अुसका दान-पत्र स्वीकार कर लिया और अुस पर लिख दिया "अिस मनुष्य की बाकी हालत देखते हुअे यह जमीन अिन्हीं को देनी है। अनेक आग्रह से अुनके समाधानार्थ हमने ली है। अुन्हींको प्रसादरूप वापस देते हैं।"

अेक आदिवासी भी आगे आये

अेक गोंड ने अपनी जमीन का चौथा हिस्सा, १४ अेकड़, अैसी जमीन दी, जो अुसने अपने लिअे तैयार की थी। खाद डाल चुका था। पानी की बूँदें भी बरस चुकी थीं। बोनी हो रही थी। गोंड ने दान देते हुअे कहा—"मैं अपने लिअे और जोत लूँगा, पर ये गरीब कहाँ से साधन जुटायेंगे? देनी है तो अच्छी जमीन देनी चाहिअे।"

कीर्तिशाली मँगरौठ ग्राम

हमीरपुर जिले के पहले गाँव मँगरौठ ने तो भूदान-यज्ञ के सिलसिले में अैसा चमत्कार कर दिया, जिससे वह अजर-अमर हो गया। और अन्त मे विनोबाजी के भूदान-यज्ञ में "सबै भूमि गोपाल की" का आदर्श पूरा करने का श्रेय भी अुसने प्राप्त कर लिया। अिस गाँव के ६६ भूमिवानों ने अपनी सारी भूमि करीब तेरह सौ अेकड़, विनोबाजी के सुपुर्द कर दी और यह सब प्रेरणा अुनको विनोबाजी के सन्देश मात्र से मिली। स्वयं विनोबाजी अुस गाँव मे पहुँच ही नहीं पाये। गाँव से दो मील पर, जहाँ से विनोबाजी का मार्ग गुजरता था, सब लोग दर्शन के लिअे पहुँचे। कलेवे के लिअे जैसे भगवान् रामचन्द्र को अुन कोल-किरातो ने पत्र-पुष्प भेंट किये थे, ये लोग भी अपनी श्रद्धाजलि ले आये थे—अेक सौ अेक अेकड़ भूमि का दान। विनोबाजी ने अुसे स्वीकार करते हुअे अपने छोटे-से प्रवचन मे अेक विचार अिन लोगों के सामने रखा—"सबै भूमि गोपाल की।"

आज मँगरौठ मे कोअी भूमिपति नहीं है। "जाचक सबै अजाचक" हो गये हैं। सब मिलकर काश्त करना तय हुआ है।

नागपुर के एक दर्जी का दान

अेक दर्जी ने अपनी सारी १२७ अेकड़ जमीन, शहर का अेक मकान भूदान मे दे दिया। अुनसे पूछने पर अुन्होने कहा—"मैं दर्जी के काम से पेट भर लूँगा। जिस जमीन को मैं जोतता नहीं और जिस मकान को मैं

साफ नहीं करता, अुस जमीन अेव मकान के किराये पर जिन्दा रहना पाप है। मै अुससे मुक्त होना चाहता हूँ।"

छिंदवाड़ा जिला के गणेशगंज गाँव का अेक वाकया

अेक प्रायमरी स्कूल के अध्यापक ने अपनी सब ३॥ अेकड़ जमीन दान मे दे दी। सभा के पूर्व भूदान का अुनका कोई अिरादा नहीं था।

छिंदवाड़ा जिले के झिलमिली गाँव का अेक प्रसग

अेक प्रायमरी स्कूल के अध्यापक ने ३॥ अेकड़ जमीन म से १ अेकड़ जमीन दान मे दे दी, अेक महीने का वेतन दिया और जिसे जमीन मिलेगी अुसके खेत मे अेक महीने मुफ्त काम करने का वचन दिया।

होशंगाबाद जिले के बरमान गाँव में सर्वस्वदान

कुँवरबाई नाम की अेक महिला ने दो अेकड़ जमीन का सर्वस्वदान किया। पूछने पर कहा—"मै गाय-भैंस के दूध से अपना पेट भर लूँगी।"

गया जिले के टिकारी गाँव के महाराजकुमार का महान् दान

टिकारी के महाराजकुमार ने ३० बीघा जमीन दान में देने को कहा। जब जयप्रकाशजी ने अुन्हें समझाया, तब ३० बीघा से ३६७० बीघा जमीन ८००० अेकड़ की सपत्ति मे से दान मे देने का अुसी समय कबूल कर लिया।

हजारीबाग जिले मे रंका के राजा साहब का दान

रंका के राजा ने प्रथम अेव द्वितीय बार कार्यकर्ताओं को अुन्होंने जितनी जमीन माँगी याने ५०० अेव ५००० अेकड़, अुतनी दे दी। जब विनोबाजी गये तब अुन्होंने जितनी जमीन माँगी अुतनी यानी पूरी-की-पूरी ? लाख अेकड़ परती जमीन अेव २००० अेकड़ जमीन काश्त की (कुल काश्त की जमीन का छठा हिस्सा) विनोबाजी को दान म दे दी।

बिहार के रामगढ के राजा का २॥ लाख अेकड़ भूमि का दान

श्री कामाख्यानारायण सिंह नाम के रामगढ के राजा ने पहले ? लाख

अेकड जमीन दान में देने पर भी जब विनोबाजी गये तब २॥ लाख अेकड़ जमीन दान मे दे दी।

श्री शंकरराव देव के दौरे की अेक घटना

अुनका भाषण हुआ अेक मामूली शहर की सभा में। भीड़ काफी थी। भाषण के पश्चात् शंकररावजी ने कहा—"अिस देश में जो जोतने लायक जमीन है वह और जो जोतनेवाले है वे, अिनका हिसाब लगाकर देखिये। अेक आदमी को पौन अेकड़ भी जमीन नसीब नहीं हो सकती। अैसी हालत मे ज्यादा जमीन का मालिक बने रहना न तो धर्मसंगत है, न मानवतायुक्त ही।" यह दलील सुननेवालों पर असर कर गयी। अेक भाअी ने अुठकर कहा—"मैं तेरह अेकड़ जमीन का दान दे रहा हूँ। मेरे पास केवल १४ अेकड़ भूमि है।" सारी सभा अवाक् रह गयी। मित्रों ने अुसे समझाने की कोशिश की। वह कहने लगा—"मैंने हिसाब से थोड़ी कम दी है और खुद के लिअे पाव अेकड़ ज्यादा रख ली है। पता नहीं, मोह से छुटकारा कैसे होगा।"

•

साम्यवादी भी दान दे रहे हैं

लोगों को अचम्भा तो तब हुआ, जब मैंने सुना कि मैनपुरी जिले के कम्युनिस्ट नेता श्री बाबूराम पालीवाल ने भी, अपने गॉव के नजदीक विनोबाजी कलेवे के लिअे रुके, तो न सिर्फ २ अेकड़ जमीन दी, बल्कि सहयोग का आश्वासन भी दिया।

जवाहरलाल—निहायत खुशी हुअी मुझे यह सुनकर संपूर्णदासजी! भूदान का यह काम कित्ती छोटी शक्ल मे शुरू हुआ और कहाँ से कहाँ पहुँच गया। कअी मर्तबा बड़े-बडे साअिण्टिस्ट और अेक्सपर्ट सोचते ही रह जाते हैं। अिस तरह की बातें अुनके सोच-विचार के दायरे में ही नहीं आ पातीं और विनोबाजी के मानिन्द आदमी अिन कामों को कर डालते हैं। जब गांधीजी ने ही 'नमक-सत्याग्रह' शुरू किया तब वह हममे से बहुत कम लोगों की समझ मे आया था। हमारे मुल्क की जमीन का पूरा मसला चाहे

भूदान मे हल न भी हो सके और अिसके मुतल्लिक चाहे हमें कुछ कानून बनाने भी पड़े, मगर अिस भूदान से अिस मसले को हल करने मे हमे बहुत बड़ी मदद मिलेगी।

तीसरा—भूमि सबधी कानून बनाने के विनोबाजी तथा अुनके साथी विरुद्ध भी नहीं है।

(कुछ देर निस्तब्धता)

जवाहरलाल—(अुठते हुअे) अच्छा तो फिर अिजाजत। विनोबाजी और आप लोगो को अिस काम मे पूरी कामयाबी मिले, यह मेरी दिली ख्वाहिश है।

[अुसी समय अेक वृद्ध का, हाथ में अेक पत्र लिये हुअे शीघ्रता से प्रवेश।]

जवाहरलाल—(वृद्ध से) शुक्रिया, बहुत-बहुत शुक्रिया। (शेष उपस्थित लोगों से) लीजिये, मुझे भी भूदान मिल रहा है। लड़के का दान पिता लाये है। सुनिये, क्या लिखा है लड़के ने अपने खत म। (पत्र पढ़ते हैं)

बच्चों के लाडले नेहरू चाचा,

जय हिन्द

मेरा मे सविनय निवेदन है कि मुझे लोगों के जबानी और अखबारों के समाचारों से मालूम हुआ कि लोग सहर्ष गरीब लोगों के वास्ते मुफ्त जमीनें आचार्य विनोबा भावे की सस्था को भेंट कर रहे है। मै भी अपनी हार्दिक अिच्छा से श्री नेहरू चाचा की ६३ वीं वर्षगाँठ की खुशी में नीचे लिखी अपनी कुल जमीन जायदाद, मकान वगैरह भेंट करता हूँ। मुझे अुम्मीद है, आप मेरी भेंट स्वीकार करेंगे।

दर्शनाभिलाषी सेवक,
कृष्णकुमार दागी,
कक्षा चौथी हिन्दी, अुम्र नौ साल।

[पत्र का अंतिम भाग पढ़ते-पढ़ते जवाहरलालजी का कंठ गद्‌गदहो जाता है]

सम्पूर्णदास—अेक बच्चे का यह दान !

अेक महिला—आदर्श, महान्‌ आदर्श दान है यह !

जवाहरलाल—(अुसी प्रकार गद्‌गद स्वर में) बेशक.....बेशक ।

लघु यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान—कलकत्ते का विक्टोरिया मेमोरियल ।

समय—प्रातःकाल ।

[पीछे की ओर विक्टोरिया मेमोरियल भवन का कुछ भाग दिखाई पड़ता है। बगीचे के अेक भाग में नर-नारियों का अेक समुदाय बैठा हुआ बातें कर रहा है । अिस समुदाय में कुछ कांग्रेसी, कुछ प्रजा-समाजवादी, कुछ जनसंघी, राम-राज्य-परिषद्‌वाले और हिन्दू महासभाअी, कुछ साम्यवादी और कुछ भिन्न-भिन्न वर्गों के साधारण नागरिक हैं ।]

अेक कांग्रेसी—हॉं, विनोबाजी की मॉंग पॉंच करोड़ अेकड़ भूमि की है।

एक नागरिक—(कुछ आश्चर्य से) पॉंच करोड़ अेकड़ ?

वही कांग्रेसी—जी हॉं, पॉंच करोड़ अेकड़ और अिस मॉंग के पीछे अेक पूरा हिसाब है । अिस देश में छत्तीस करोड़ मनुष्य रहते हैं । अिन छत्तीस करोड़ मानवों में तीस करोड़ अपनी जीविका खेती से चलाते हैं । तीस करोड़ अेकड़ ही यहॉं खेती के लायक जमीन है। इन तीस करोड़ आदमियों में पॉंच करोड़ भूमिहीन हैं। इन पॉंच करोड़ भूमि-हीनों के लिअे विनोबाजी पॉंच करोड़ अेकड़ जमीन चाहते हैं। चूँकि खेती

करनेवालों का छठा भाग भूमिहीन है और चूँकि जमीन अुतनी ही है, जितने खेती पर गुजर-बसर करनेवाले हैं, अिससे विनोबाजी कहते हैं कि हर भूमि-पति अपनी भूमि का छठा भाग दान में दे दे।

अेक प्रजा-समाजवादी—सारा किला हवा में बनाया जा रहा है।

अेक साम्यवादी—और जो कुछ हो रहा है, सो शेब ठो हमारा शाम्य-वाद का, शारा वैज्ञानिक शिद्धान्त का विरुद्ध है।

रामराज्य-परिषद्‌वाला—और यह कैसा दान है ?

जनसंघी—और कैसा यज्ञ है ?

हिन्दूसभाअी—हाँ, किस हिन्दू शास्त्र के अनुसार ?

अेक मुसलमान—और कुरान शरीफ की भी किसी आयत के मुताबिक नहीं।

अेक पारसी—न कभी पाँच करोड़ अेकड़ जमीन मिलनी है और न भूमिहीनों की समस्या का हल होना है।

अेक व्यक्ति—हाँ, न तो नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी।

अेक सिख—अजी, डंडा दा काम कभी बातों से हुआ है ? जब डंडा अुठेगा तब जमीन मिलेगी, बातों से मिलनेवाली नहीं है।

अेक मारवाडी—हर बात में डंडा, सरदारजी। कठे कठे किण किण बात पे डंडा अुठा स्यो ?

वही सिख—डंडा दा काम, सेठजी, बड़ा सोणा है, अिक्क दो तीन।

(सब लोग हँस पड़ते हैं)

पहला कांग्रेसी—मैं भी यह मानता हूँ कि सबका सब भूदान-यज्ञ अेक बड़ा भारी हवाअी किला है।

अेक महिला—कितने दिन से यह आन्दोलन चल रहा है ? कोअी दो ढाअी वर्ष हुअे होंगे·····क्यों ?

पहला कांग्रेसी—(विचारते हुए) हाँ, और क्या।

वही महिला—और अितने समय में कितनी जमीन मिली होगी ?

पहला कांग्रेसी—करीब वीस लाख अेकड़ ।

वही महिला—विनोबाजी पाँच करोड़ अेकड जमीन चाहते है सन् १९५७ तक, अर्थात् अगले चार वर्षों के भीतर, क्यों ?

पहला कांग्रेसी—हाँ, सन् १९५७ तक ।

वही महिला—(अुपस्थित समुदाय से) अब आप ही लोग देखिये कि दो ढाअी साल मे २० लाख अेकड जमीन मिली, तो अगले चार साल में पॉच करोड़ अेकड़ कैसे मिल जायगी ?

पहला साम्यवादी—कोभी'' कोभी नोअी होने शाकता ।

बहुत से लोग—(अेक साथ) असभव है । अेकदम गैरमुमकिन ।

पहला कांग्रेसी—अिसका तो उत्तर है ।

मुसलमान—अजी जनाबे आली, जवाब तो हर बात का दिया जा सकता है, लेकिन अुस जवाब में कुछ कूवत भी है ?

पहला कांग्रेसी—नहीं, नहीं, अिसका अुत्तर तो है । पहले साल विनोबा-जी को सिर्फ अेक लाख अेकड़ जमीन मिली थी । दूसरे वर्ष अिससे बारह गुनी अर्थात् बारह लाख अेकड़ मिली । अब यदि हर साल पहले साल से बारह-बारह गुनी अधिक मिलने लगे, तो सन् १९५७ तक पॉच करोड़ अेकड़ से भी अधिक हो जाती है ।

मारवाडी—अजी, भाअीजी, यो हिसाब तो कागद को हिसाब हे, कागद को ।

सिख—ठीक कह रहा है, सेठ ।

पहला कांग्रेसी—फिर विनोबाजी सरकार से भी जमीनें मॉगेंगे । अुनका कहना है कि जनता मे जमीन मिलने पर अेक नया वायु-मण्डल बनेगा और सरकार से जमीन माँगने के लिअे अुनके हाथ मजबूत होंगे । जमींदारी खत्म होने पर सरकार के पास काफी जमीन आयी है । तो पॉच करोड़ अेकड में जो कमी रह जायगी, वह पूरी कर देगी सरकार ।

पहला प्रजा-समाजवादी—हवाओ किला न० २।

(कुछ लोग हँस पड़ते हैं)

अेक नागरिक—(पहले कांग्रेसी से) अब खैर, यह बताअिये कि यदि हम थोड़ी देर को यह मान भी लें कि पाँच करोड़ अेकड़ जमीन मिल जायगी, तो अिसका वितरण कैसे होगा और क्या सबको बराबर जमीन दी जायगी ?

पहला कांग्रेसी—वितरण की भी योजना बन गयी है। जिस गाँव की जमीन होगी अुस गाँव के लोगों को अिकट्ठा किया जायगा और अुनसे पूछकर अुस गाँव के भूमिहीनों को औसत से पाँच-पाँच व्यक्तियों के अेक-अेक कुटुम्ब को पाँच पाँच अेकड़ जमीन दी जायगी। बहुत अुपजाअू जमीन होगी तो पाँच अेकड़ से कम और कम उपजाअू होगी तो पाँच अेकड़ से अधिक—अेक कुटुम्ब का गुजर-बसर जितनी जमीन से चलेगा, अुतनी। अुस जमीन को दस बरस तक यह कुटुम्ब न बेच सकेगा, न रेहन रख सकेगा और न किसीको शिकमी अुठा सकेगा। अिस विषय में कुछ कानून भी बन चुके हैं और बनते जा रहे हैं।

अेक महिला—और वे भूमिहीन बेचारे अुस जमीन पर जो पूंजी लगेगी वह कहाँ से लायेंगे, क्योंकि जो जमीन दान में मिली है वह अधिकांश पड़ती और रद्दी ही होगी ?

पहला कांग्रेसी—नहीं, अेक तो सारी जमीन पड़ती और रद्दी नहीं है, सब तरह की है और बहुत कुछ अच्छी भी है, पर खेती में लागत और श्रम अवश्य लगेगा। अिसीलिअे विनोबाजी अब भूदान के साथ संपत्ति-दान और श्रम दान भी माँगते हैं। फिर सरकार से बैल तथा बीज के लिअे तकावी मिलेगी, जो अिस समय के काश्तकारों को भी मिलती है।

अेक अंग्रेजीदाँ—आउ फंटेस्टिक। आउ फंटेस्टिक।

अेक व्यक्ति—(कुछ दूर पर देखते हुए) लीजिये, जयप्रकाश नारायणजी

आ रहे हैं। अब अुनसे और सुन लीजियेगा, भूदान पर एक लम्बा भाषण।

अेक महिला—(अुसी ओर देखते हुअे) ये तो अिस भूदान के मामले मे पागल हो गये हैं।

[जयप्रकाश नारायण का प्रवेश। सभी अुनका अभिवादन करते हैं। वे सबके अभिवादन का हाथ जोड नम्रतापूर्वक अुत्तर देते हैं।]

जयप्रकाश नारायण—अच्छा, आज तो यहाँ बहुत से दलों और सनुदायों के महानुभाव अिकट्ठे ही मिल गये।

अेक व्यक्ति—जी हाँ, हम लोग अभी यहाँ आपके आजकल के प्रिय विषय भूदान-यज्ञ की चर्चा कर रहे थे।

जयप्रकाश नारायण—अच्छा, अच्छा, बैठिये, तो फिर मैं भी आपकी अिस चर्चा में थोडा-सा भाग ले लूँ।

कुछ व्यक्ति (अेक साथ) हाँ, हाँ, हम सबको बड़ी खुशी होगी, बड़ी खुशी।

[जयप्रकाश नारायण और सारा समुदाय बैठ जाता है]

जयप्रकाश नारायण—कहिये, भूदान के सम्बन्ध मे क्या चर्चा हो रही थी?

(कुछ लोग मुस्कराते हुए अेक-दूसरे की ओर देखते हैं)

जयप्रकाश नारायण—(अिन मुस्करानेवालों में अेक-अेक की तरफ वारी-वारी से देखते हैं) अच्छा, आप लोगों की मुद्रा से जान पड़ता है कि भूदान की सफलता मे आप लोगों को सन्देह है?

कुछ व्यक्ति—(अेक साथ) अैसा ....अैसा तो नहीं, पर...पर...

जयप्रकाश नारायण—नहीं, नहीं, आप ही लोगों को बात नहीं है, पढे-लिखे लोगों को अिस आन्दोलन की सफलता पर मुश्किल से विश्वास होता है। सभी देशों मे पढ़े-लिखे लोग जल्दी से किसी बात पर विश्वास नहीं करते और हमारे देश में तो हम पढ़े-लिखे लोग अविश्वास के मूर्तिमन्त रूप हो गये हैं।

श्रेक महिला—अिसका कारण ?

जयप्रकाश नारायण—अिसका प्रधान कारण है, आधुनिक शिक्षा। खैर, छोड़िये अिस बात को, हम भूदान पर आयें। आप लोगों को अिस विषय म जो शकाअें होंगी, वे प्राय वही होंगी, जो मैंने अधिकाश स्थानो मे पायीं। अर्थात् जितनी जमीन की जरूरत है, अुतनी मिलेगी या नहीं ? मिली हुअी जमीन बाँटी कैसे जायगी ? अित्यादि। क्यों अिसी तरह की शकाअें है या और कोई ?

कुछ व्यक्ति—(अेक साथ) हाँ...हाँ...बस, अिसी तरह की।

जयप्रकाश नारायण—मैंने कहा न, सब जगह ये शकाअें प्राय. अेक सी है, पर अिन शकाओं के समाधान के सम्बन्ध मे लोगो के मतों मे विभिन्नता है।

कुछ व्यक्ति—कैसी ?

जयप्रकाश नारायण—जैसे पहले अिसी बात को ले लीजिये कि जितनी जमीन की जरूरत है, अुतनी मिलेगी या नहीं। अिस सम्बन्ध मे जो लोग भूदान यज्ञ का काम कर रहे है, अुन सबकी अेक राय नहीं। आप जानते है, विनोबाजी कितनी जमीन चाहते है ?

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) पाँच करोड़ एकड़ !

जयप्रकाश नारायण—ठीक, पर मेरी राय है कि इस देश की भूमि का प्रश्न हल करने के लिए अिससे भी अधिक भूमि चाहिए। अिसीलिए मै कहा करता हूँ कि भूदान-यज्ञ के इस आन्दोलन मे आगे चलकर सत्याग्रह की भी आवश्यकता पड़ सकती है।

श्रेक व्यक्ति—हाँ, यह आपने अपने कभी भाषणों मे कहा है।

जयप्रकाश नारायण—फिर भूमि का बँटवारा केवल भूमिदान मे मिली हुअी जमीन से ही सम्बन्ध रखता है, यह भी मै नहीं मानता।

कुछ व्यक्ति—(श्रेक साथ) तब ?

जयप्रकाश नारायण—मै तो यह मानता हूँ कि अिस देश की सारी जमीन का पुन वितरण होना चाहिअे।

एक प्रजासमाजवादी—यह तो हमारे दल के कार्यक्रम का भी अेक मुख्य विषय है।

अेक कांग्रेसवादी—काग्रेस भी यह कहाँ चाहती है कि जिनके पास जितनी जमीन है, सब जैसी-की-तैसी रहने दी जाय।

अेक जनसंघी—तो जिस तरह जमींदारों को लूटा है, अुसी तरह अिन बेचारो को भी लूट लो।

अेक साम्यवादी—(अुत्तेजित होकर) लूट। अरे, लुटेरा तो जमीदार था। भूमिपोती है। डाकू कोहीं का .....

जयप्रकाश नारायण—देखिये, दरअसल यह सवाल समाज के नये संगठन के लिअे अेक बुनियादी सवाल है। भिन्न-भिन्न लोग, भिन्न-भिन्न दल अिस विषय मे भिन्न-भिन्न राय रखते है। मेरे मतानुसार अिस देश की तमाम जमीन का फिर से बँटवारा होना चाहिअे।

पहला कांग्रेसी—और अिन मतो को रखते हुए भी आप विनोबाजी के भूदान-यज्ञ आन्दोलन के सबसे बड़े समर्थकों मे हैं।

जयप्रकाश नारायण—मेरे अिन मतों के विरुद्ध विनोबाजी ने कभी अेक शब्द भी नहीं कहा, बल्कि आगे चलकर सत्याग्रह की आवश्यकता कभी भी नहीं पड़ेगी, यह भी अुन्होंने नहीं कहा। मै भूदान-यज्ञ का समर्थक अिसलिअे हूँ कि देश मे अिस भूदान-यज्ञ से समाज के नये संगठन के सम्बन्ध में जो अेक वायुमण्डल तैयार हो रहा है, वह संसार के अितिहास की अेक अभूतपूर्व घटना है। अिस देश के सभी प्रकार के लोगो मे, चाहे वे धनवान् हों या निर्धन, जो हृदय-परिवर्तन हो रहा है वह देखने की चीज है। फिर यह अेक अैसा काम है, जिसमें सब प्रकार के दल अपनी दलगत बातों से अूपर अुठ अेक साथ कन्धे मे कन्धा मिलाकर काम कर सकते हैं। अेक काम मे अेक-दूसरे से सहयोग के बाद और भी अनेक कामों मे परस्पर सहयोग हो सकता है। देश के पुनर्निर्माण मे मै अिस प्रकार के सहयोग

को आज सबसे महत्त्वपूर्ण मानता हूँ। (कुछ रुककर) मैं आप सबसे प्रार्थना करता हूँ कि शकाओं को अेक तरफ रखकर अिस वक्त सब लोग विनोबाजी के अिस भूदान-यज्ञ मे जुट जाअिये और अपनी-अपनी आहुति अिस यज्ञ मे डालिये।

अेक रामराज्य-परिषद्वाला—यह कैसा यज्ञ है? किस वेद, किस शास्त्र के अनुसार?

अेक हिन्दूसभाई—और यह कैसा दान है? सतोगुणी, रजोगुणी या तमोगुणी?

जयप्रकाश नारायण—यज्ञ और दान शब्द के प्रचलित अर्थों मे मत जाअिये। यह यज्ञ और दान क्रान्तिकारी यज्ञ और दान है।

अेक साम्यवादी—क्रान्ति शब्द का बार-बार उपयोग कर आप अुस शब्द को लज्जित मत कीजिये।

दूसरा साम्यवादी—क्रान्ति ..क्रान्ति हो हुआ रोशिया मे, चाअिना मे।

जयप्रकाश नारायण—रूस और चीन मे क्रान्ति नहीं हुअी, यह मै नहीं कहता, पर रूस और चीन की हर बात मे नकल की जाय यह भी मै जरूरी नहीं मानता। साथ ही हर देश मे रूस और चीन के ढग की ही क्रान्ति होगी, यह भविष्यवाणी भी कोअी नहीं कर सकता। (कुछ रुककर) कहिये फिर?

(अधिकाश लोग अेक-दूसरे की ओर देखते हैं)

जयप्रकाश नारायण—मै जानता हूँ कि पढे-लिखे लोगों की शकाओं का समाधान कर उन्हें किसी काम मे जुटा देना सरल बात नहीं है। (कुछ रुककर) सोचिये खूब सोचिये। यदि आपने निष्पक्षता और शाति से सब बातो पर विचार किया, तो मेरा निश्चित विश्वास है कि आप एक ही नतीजे पर पहुँचेंगे कि भूदान-यज्ञ से महान् काम अिस समय देश मे और नहीं है।

[नेपथ्य में अेक गान की ध्वनि सुन पड़ती है। सबका ध्यान अुस ओर आकृष्ट होता है।]

गीत

आज अिक फकीर की जो भूमि की पुकार है,
पुकार है यह दीन की यह देश की पुकार है।
पुकार दीन-हीन की, न अब भुलायेंगे,
भूमि-दान-यज्ञ हम सफल बनायेंगे॥ १ ॥

आज है चतुर् दिशा में गूँज साम्यवाद की,
क्त्ल से, कानून से, खूनी क्रांति नाद की।
किन्तु हम तो करुणा का ही पथ बनायेंगे,
भूमि-दान-यज्ञ हम सफल बनायेंगे॥ २ ॥

प्रेम से हो भूमिदान, प्रेम से ही क्रान्ति हो,
विश्व का कलह मिटे, फिर सदा को शान्ति हो।
हम मनुज को शान्ति की सुधा पिलायेंगे,
भूमि-दान-यज्ञ हम सफल बनायेंगे॥ ३ ॥

सबके पास हो धरा, सभीके पास धाम हो,
सबको अन्न-वस्त्र हो, सभीके पास काम हो।
फिर अशान्ति की निशा को हम मिटायेंगे,
भूमि-दान-यज्ञ हम सफल बनायेंगे॥ ४ ॥

द्वार-द्वार नग्न-पद जो दीन-हेतु जा रहा,
यह राम है या कृष्ण है जो प्रेम-गीत गा रहा।
इस 'विनोबा' संत पै सब कुछ लुटायेंगे,
भूमि-दान-यज्ञ हम सफल बनायेंगे॥ ५ ॥

सत्य-शान्ति की दिशा में यह नया प्रयोग है,
सन्त का प्रयास है, यह अेक शुभ सयोग है।
उठ पडो अै भारतीय जग जगायेंगे,
भूमि-दान-यज्ञ हम सफल बनायेंगे ॥ ६ ॥*

लघु यवनिका

* श्री खुराज सिंह कृत।

तीसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान—गया मे एक जमींदार के भवन का हाल। समय—तीसरा पहर।

अेक वृद्ध जमींदार—तो आखिर हमे गुफ्तगू कर अिस बात का फैसला तो करना ही होगा कि अिस मामले मे किया क्या जाय ?

कई—(अेक साथ) हॉ, हॉ, अिसमे शक ही क्या है।

पहला वृद्ध—पहले जमींदारी चली गयी, फिर जब यह सुना कि अिसका भी कानून बनेगा कि फी शख्स या फी खानदान के पास अितनी जमीन से ज्यादा न रह सकेगी, तब जमीन बेचने का अिरादा किया। अब अिस विनोबा की वजह से जमीन का कोअी खरीदार ही नहीं।

अेक अन्य—हाँ, हॉ, यह जरूर हुआ होगा। मेरे पास कोअी डेढ लाख अेकड जमीन है। मै अिन्हीं अफवाहों की वजह से अपनी जमीन का ज्यादातर हिस्सा फरोख्त करना चाहता था और अेक जमाने मे अुसकी काफी कीमत थी। साथ ही खरीदारों की भी कमी न थी, लेकिन आज कोअी लेनेवाला नहीं।

अेक दूसरा व्यक्ति—मेरे पास डेढ लाख अेकड़ से भी कुछ ज्यादा ही जमीन होगी, पर हममे से कितनो ने अपनी कुल जमीन देखी है ?

पहला—जमीनों के निस्बत जो कानून बननेवाला है अुसके पहले यह जमीनें अिस विनोबा की वजह से बेची किस तरह से जायें। आधी दूधी जिस कीमत मे भी जमीनें बिकें, बेचकर गुजर-बसर के लिए कुछ रुपया तो अिकट्ठा कर लें।

अेक दूसरा—पर बिकें तब तो ?

अेक अन्य—हाँ, जो कुछ हो, किन्तु मै तो अिस जमीन के प्रश्न को अेक दूसरी दृष्टि से ही देखता हूँ।

अेक दूसरा—कैसे ?

वही—देखिये, अिस देश मे अनाज की कमी है। अैसी दशा मे क्या आप सोचते है कि सरकार जमीन के बॅटवारे का सवाल हाथ मे लेगी, क्योकि अिससे अुत्पादन अुल्टा घट जायगा और जितना रुपया आज हम बाहर के अनाज के लिअ भेजते है अुससे कही ज्यादा भेजना होगा।

अेक अन्य—हाँ, हम तो चाहिअे कि बड़े बड़े फार्म जहाँ मशीनो से काम कर अुत्पादन बढ़ाया जाय।

अेक दूसरा—अरे छोड़िये अिस बात को। अिस सरकार का काम आप समझते है मस्तिष्क से चलता है ?

अेक अन्य—बिल्कुल चौपट। राजा-महाराजाओ और जमींदारो को खत्म-कर देश की सच्ची सपत्ति और सभ्यता का नाश कर दिया। अिनकम टैक्स के मामले मे नये नये कानून बनाकर और नयी नयी कार-वाअियाँ करके अुद्योग धधों का जो प्रचार हो रहा था वह कतअी रोक दिया और अब जमीन का बॅटवारा कर अनाज का अुत्पादन समाप्त कर देगी। अगर यही सरकार रही, तो कुछ दिनो मे यह देश भिखमगो का देश रह जायगा।

अेक दूसरा—अिसी कयामत का मुझे खौफ था, अिसीलिअे आप जानते है, मै सुराज के अितना खिलाफ था।

शिवसत्यनारायण सिन्हा—आप ही क्या, नवाब साहब, हम लोगों म ज्यादातर लोग स्वराज्य क खिलाफ थे, हम स्वराज्य के लायक ही न थे।

पहला—फिर अपनी बात पर वापस लौटने की मै याद दिलाता हू। सोचिये यह कि अिस जमीन के मामले मे करना क्या है ?

(सब लोग अेक-दूसरे की ओर देखते हैं। कुछ देर निस्तब्धता)

पहला—तो किसीको कुछ सूझ नहीं रहा है ?

कुछ—(अेक साथ) सच बात तो यही है।

अेक नौजवान—मेरी यह राय है कि हमें स्वय अपनी जमीनें विनोबाजी को दे देनी चाहिअे।

नवाब—याने खुदकुशी कर लेनी चाहिअे। क्या खूब ! वाह ! वाह !

वह नौजवान—मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि व्यापक दृष्टि को अेक तरफ रख यदि हम अपने फिरके के हित की दृष्टि से भी अिस सवाल को देखें, तो भी हमारा फायदा विनोबाजी का साथ देने में ही है।

कुछ—(अेक साथ) कैसे ?

वह नौजवान—अैसे कि विनोबाजी हमारी जमीन में से छठा हिस्सा ही माँगते हैं न ?

अेक जमींदारिन—हाँ, अभी तो छठा भाग ही माँगते हैं।

वह नौजवान—अभी की बात ही लीजिये। आजकल दुनिया में सब चीजें अितनी तेज चाल से चल रही हैं कि बहुत दिन के लिअे तो कोई भी किसी बात के सबंध में कोई निश्चित बात नहीं कह सकता। अभी यदि अुन्हें अितनी जमीन मिल गयी, तो भूमिहीनों का सवाल हल हो जायगा। नहीं तो यहाँ भी वही होगा, जो रूस और चीन में हुआ और उसमें हमारा फिरका तो नेस्तनाबूद हो जायगा। मैं तो अुन्हें अिस देश का ही नहीं, देश के साथ अपने जमींदार-वर्ग का भी तारक मानता हूँ।

जमींदारिन—तो आपने तो अपनी जमीन का छठा हिस्सा देना विनोबाजी को तय कर ही लिया होगा ?

वह नौजवान—देखिये, मेरा मत तो यह है कि अगर निन्यानबे भिखमंगे हैं, तो अेक सपन्न नहीं रह सकता, चाहे सारा देश भिखमंगा ही क्यों न हो जाय। यह आर्थिक असमानता रह ही न सकती और जिस प्रकार निन्यानबे रहते है उसी तरह सौवें को भी रहने के लिअे तैयार होना

पड़ेगा। मैंने अपनी अेक लाख एकड़ जमीन विनोबाजी को देना तय किया है।

कुछ व्यक्ति—एक लाख अेकड़!

(कुछ देर निस्तब्धता)

शिवसत्यनारायण सिन्हा—राजीवरंजन सिन्हाजी, मैं आपके पिता के दोस्तों में हूँ। आपको कुछ राय देने का हक रखता हूँ। अभी आपके पिता के स्वर्गवास को बहुत वक्त नहीं बीता है। मैं कहना चाहता हूँ कि आपको कुछ आँख खोलकर चलना चाहिअे।

नवाब—आपने कभी सोचा कि आपने अगर अैसा किया, तो बहिश्त में अुनकी रूह को कैसी ठेस पहुँचेगी?

(कोई कुछ नहीं बोलता। कुछ देर निस्तब्धता)

अेक दूसरा—और यह भी सोच लीजिये कि आपके फिरके का कोई भी आदमी आपका साथ न देगा। आप अकेले ही रहेंगे।

नौजवान—अकेला रहा तो क्या हुआ? धर्म, परमात्मा तो साथ है?

जमींदारिन—भैया, मैं आपका साथ दूँगी।

गीत

यदि तोर डाक सुने केअु ना आसे तबे अेकला चलो रे,
अेकला चलो, अेकला चलो, अेकला चलो रे!
यदि केअु कथा ना कय, ओरे, ओरे, ओ अभागा,
यदि सबाअी थाके मुख फिराये, सबाअी करे भय तबे परान खुले
ओरे, तुअी मुख फुटे तोर मनेर कथा अेकला बोलो रे!
यदि सबाअी फिरे जाय, ओरे, ओ अभागा,
यदि गहन पथे जाबार काले केअु फिरे ना तबे पथेर काटा
ओ, तुअी रक्त माखा चरन तले अेकला दलो रे!
यदि आलो ना धरे, ओरे, ओरे, ओ अभागा,

यदि भानु बादले आंधार राते दुआर देय घरे तबे वज्रानले
आपन बुकेर पांचर ज्वालिये निये अेकला जलो रे ? ※

लघु यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान—बम्बअी क बेलार्डपियर बन्दर का आनेवाले यात्रियों के बैठने का आलय। समय—प्रात:काल।

(अेक टेबल के चारों ओर विदेशी पत्रकार बैठे हुअे हैं, अिनमें दो स्त्रियाँ और तीन पुरुष हैं। सबकी वेष-भूषा यूरोपीय है।)

एक स्त्री—टो अपना-अपना नाम, जिस मुलुक से जो आया, उस मुलुक का नाम खुदअी बटलाकर अिन्ट्रोडक्शन अेक-डूसरे का कर लेना चअिअे। माअि नेम अिज मार्गरेट, रैम्सडन आअि कम फ्राम अिंग्लैंड अेण्ड आअि रिप्रेजेन्ट रायटर्स।

अेक पुरुष—हमरा नाम चार्ल्स स्टीवन्सन। हम अमरीका से आया। न्यूयार्क टाअिम्स फारेन कौरस्पाण्डेण्ट।

दूसरा पुरुष—ओच्यूअी टोकियो टाअिम्स।

दूसरी स्त्री—चीअेनलाअि। चाअिना। न्यूज अेजेन्सी।

तीसरा पुरुष—स्तान खोफ। रशा।

मार्गरेट—(जापानी, चीनी प्रतिनिधियों की ओर इशारा कर) मिस्टर स्टीवनसन और हम टो यहाँ का बोली समज सकटा, बोल बी सकटा। यहाँ का लैंग्वा फ्रैंका हिन्डी अबी जहाज मे पढा बी। और आप लोग ?

(स्ताने खोफ हाथ उठाकर तर्जनी उगली की पहली पौर पर अंगूठा रखता है। ओ चुअी और ची अिन लाअी भी स्ताने खोफ की नकल करती है। अिसके बाद दोनों हँस पडते हैं।)

※ श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर कृत।

स्टीवनसन—थोरा थोरा।

मार्गरेट—समज सकटा ? डेखिअे, हम लोग को अिस बूडान बज का टमाम खबर का लिअे साठ साठ रेना चाअिअे। शाठ साठ रहने से आराम बी मिलेगा और काम बी खूब होगा।

(सब लोग सिर हिलाकर 'हॉ' कहते हैं)

मार्गरेट—और हम लोगों को यह भी टय कर लेना चाअिअे कि हम लोग यहाँ का लैंग्वाफ्रैंका हिन्डी मे अी बाट करेगा। अिससे हमको यहाँ का लेंगवेज बी आ जायगा। आप सबका मुलुक मे बूडान बज का बड़ा चर्चा!

(तीनों सिर हिलाकर 'हॉ' कहते हैं)

स्टीवनसन—ओ। स्टेट्स का टो अेक बी अैसा डेली, वीकली मैगजीन नअी जिसमे विनोबा का फोटो, अुसका लाअिफ और बूडान का हाल न निकला हो। फिर अेक मर्टबाअी नअी डजन्स आफ टाअिम्स।

मार्गरेट—ग्रेट ब्रिटेन का बी ये ही हाल है।

(तीनों प्रतिनिधि फिर सिर हिलाते हैं)

मार्गरेट—ह्यूमन हिस्ट्री मे कबी बी किसी मुलुक में असा बाट नेअी हुआ कि माँगने से किसीको मिलियन्स आफ अेकर्स लैण्ड मिले।

स्टीवनसन—ये मुलुक ही वन्डरफुल। यहाँ फ्रीडम मिला बिना लराई। यहाँ का प्रिंसेज अपना टमाम पावर डे डिया बिना झगरा। यहाँ लोग मिलियन्स आफ अेकर्स जमीन डे रहा है माँगने से।

मार्गरेट—रशा और चाअिना में किटना ब्लड शैड हुआ अिस जमीन का लिये। रिवोल्यूशन।

(रूस और चीन के प्रतिनिधि सिर हिलाकर 'हॉ' कहते हैं)

स्टीवनसन—और यहाँ बिना ब्लडशैड का रिवोल्यूशन हो रहा।

मार्गरेट—यह मुल्क सेन्ट्स का, फकीर का।

(तीनों अन्य पत्र प्रतिनिधि भी सिर हिलाते हैं। नेपथ्य में अेक गान की ध्वनि आती है। सबका ध्यान अिस ओर आकर्षित होता है।)

गीत

लक्ष्मी सदैव चलती फिरती चपला-सी चमक दिखाती है,
यह धरती अचला होने से कब साथ किसीके जाती है ?
रस-वंचित होकर प्रतिक्रिया विष ही विशेष बरसाती है,
यह धरती अचला होने से कब साथ किसीके जाती है ?*

लघु यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान—तेलंगाने मे नल्गुडा । समय—रात्रि ।

रुद्रदत्त—(कुछ देर बाद सिर उठाते हुअे भर्राये हुअे स्वर में) हाँ, नवलकिशोर, मेरा अब यही मत है कि हमारा रास्ता सही नहीं है ।

नवलकिशोर—अितने साथियों की हत्या करवाने के पश्चात् जनता का अितना खून बहवाने के बाद आप अिस निर्णय पर पहुँचे हैं ?

रुद्रदत्त—तुम समझते हो कि जो कुछ हुआ है अुससे मुझसे अधिक किसीको सताप हो सकता है ? नवलकिशोर, जिन साथियों की हत्याअें हुअी है, अुनके चेहरे जागते-सोते मेरी आँखों के सामने घूमा करते हैं । जनता मे जिनका खून बहा है, अनेक वार जान पड़ता है वह खून मेरी रगों से बह रहा है । अिन सबके कुटुम्बों से मेरा परिचय नहीं, पर कल्पना कर करके मैं अिनकी माताओं, अिनके पिताओं, अिनकी पत्नियों, अिनके बचों की बिलखती-चिल्लाती आर्तनाद करती हुअी शकलों को देखा करता हूँ । मुझे दो दृश्य तो कभी भुलाये नहीं भूलते—धर्मव्रत द्वारा अपने अुस

---

* श्री मैथिलीशरण गुप्त कृत ।

साथी का वध, जिसकी राय के अनुसार ही आज मेरा मत हो गया है, और अुस साथी की हत्या के कारण धर्मव्रत का पागल होकर आत्महत्या करना। नवलकिशोर, नवलकिशोर! मै मस्तिष्क से ग्रसित होता हूँ, लेकिन मुझसे ज्यादा दुखी आज ····आज ····शायद दुनिया मे कोअी न होगा।

नवलकिशोर—पर आपका मस्तिष्क ही तो आपकी विशेषता है। अिसीलिअे तो उस दिन मैंने प्रस्ताव कर आपको अपने दल का नेता चुनवाया था।

रुद्रदत्त—मेरा मस्तिष्क कहता है कि हमारा रास्ता सही नहीं है। नवलकिशोर, तुम जानते हो अिस सारे हत्याकाण्ड मे मेरा कोअी व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं था।

नवलकिशोर—खूब जानता हूँ। आप हर तरह सपन्न थे। कुटुम्ब की दृष्टि से सब प्रकार सुखी थे। आपने अपनी सारी जायदाद मटियामेट कर डाली। अपने सुखी कुटुम्ब को छोड़ा। अपनी जान को हथेली पर रख दिन और रात, आठों पहर, चौसठों घड़ी, मारे-मारे घूम रहे है।

रुद्रदत्त—यह सब मै अिसलिअे कर सका कि जो कुछ मैं कर रहा था, अुस पर मेरा दृढ विश्वास था। पर नवलकिशोर, आज मेरा वह विश्वास काफ़ूर हो गया। देखो, समझ लो सारे विषय को, क्योंकि अब तो तुम्हीं भर बचे हो सारे साथियों मे, बहुत से मारे गये, कुछ ने साथ छोड़ दिया।

नवलकिशोर—अपने रास्ते पर चलनेवाले आज हम दो ही रह गये है, यह वजह तो आपके मत परिवर्तन की नहीं है?

रुद्रदत्त—(नवलकिशोर की ओर ध्यान से देखते हुए) तुम ····तुम भी अैसा सोच सकते हो, नवलकिशोर, तुम भी! देखो, मुझे यदि किसी रास्ते मे विश्वास हो तो चाहे तमाम दुनिया अेक तरफ रहे, चाहे फाड़कर हिंसक जन्तु के सामने उसके भक्षण के लिअे फेंक दिया जाऊँ, तो भी मै अपने पथ से विचलित न होअूँगा। पर आज तो मेरा अपने

रास्ते पर से ही जो विश्वास अुठ गया है। आज तो मै यह मनाने लगा हूँ कि जिस मार्ग पर मै चल रहा हूँ, वह मार्ग अिस देश और ससार के लिअे कल्याणकारी नहीं है। तुम जानते हो कि मै मार्क्स का कट्टर अनुयायी हूँ। और यह भी समझ लो कि मै अिस निर्णय पर पहुँचा हूँ कि हम सही नहीं है तब भी साम्यवाद और अुसके प्रमुखवाद मार्क्सवाद पर से मेरा विश्वास रचमात्र नहीं हटा है।

नवलकिशोर—(कुछ आश्चर्य से) तब ?

रुद्रदत्त—मैं आज भी अुतना ही कट्टर साम्यवादी और मार्क्सवादी हूँ, जितना कभी था।

नवलकिशोर—मेरी समझ मे नहीं आ रहा है।

रुद्रदत्त—वही तो तुम्हें समझाता हूँ। मार्क्स ने जिस पूर्ण विकसित सामाजिक रचना की कल्पना की थी, अुसमे व्यक्तिगत सपत्ति का कोअी स्थान नहीं है। अुस साम्यवादी समाज में हर व्यक्ति अपनी योग्यता तथा शक्ति के अनुसार अुत्पादन करेगा, अपनी आवश्यकता के अनुसार प्राप्त करेगा। अैसे समाज के अन्तिम विकसित रूप मे राज्य-व्यवस्था का भी लोप हो जायगा। कैपिटल के अंग्रेजी अनुवाद के शब्द है—"स्टेट विल विदर अवे"। ऐसी समाज-रचना ही पूर्ण विकसित समाज-रचना है और यही मानव के लिअे अिष्ट हो सकती है। अिसे मै आज भी मानता हूँ। अिस समाज-रचना को लाने के लिए हमने जो रास्ता पकड़ा है वह गलत है। साध्य सही है, साधन सही नहीं।

नवलकिशोर—आपका कथन समझ मे नहीं आ रहा है।

रुद्रदत्त—देखो नवलकिशोर, मुख्य बात होती है साध्य। मार्क्स के साध्य की कल्पना सही थी। मार्क्स ने जिस प्रकार के पूर्ण विकसित समाज की कल्पना की थी अुसमे राज्यव्यवस्था के लोप होने का अर्थ है फौज तथा पुलिस की भी समाप्ति, अर्थात् वह पूर्णविकसित समाज सर्वथा अहिंसक होगा। क्यों ?

नवलकिशोर—(विचारते हुअे) हाँ, यह तो आपका कथन ठीक है।

रुद्रदत्त—अब अिस साध्य को प्राप्त करने के लिअे मार्क्स जिन साधनों का अुपयोग बताते है वहाँ मेरे मतानुसार अुन्होंने गलती की है। मार्क्स की कल्पना के अनुसार पूर्णविकसित अहिंसक समाज की रचना हिंसामय साधनो से सम्भव नहीं दिखती। अिसीलिअे रूस की क्रान्ति सच्चे साम्यवादी समाज को नहीं ला सकी। चीन में भी यही हुआ।

नवलकिशोर—तब सच्चे साम्यवादी समाज की रचना किन साधनों से हो सकती है?

रुद्रदत्त—मूल्यों और हृदयों के परिवर्तन से।

नवलकिशोर—आप समझते हैं यह हो सकता है?

रुद्रदत्त—मानव समाज में यह सदा हुआ ही है।

नवलकिशोर—कैसे?

रुद्रदत्त—देखो, कभी मानव मानव को खा जाता था। अुस समय मैं समझता हूँ कि वह मानव समाज में वीरता की दृष्टि से पूजा जाता होगा, जो सबसे अधिक मानवों को खाने की क्षमता रखता होगा। कभी गुलामी की प्रथा थी। अुस समय समाज में सबसे बड़ा आदमी वह माना जाता था, जिसके कब्जे में सबसे अधिक गुलाम होते थे। आज तो वह बात नहीं रही न?

नवलकिशोर—नहीं।

रुद्रदत्त—तो मूल्यो में परिवर्तन हुआ न?

नवलकिशोर—(विचारते हुए) हाँ, हुआ तो।

रुद्रदत्त—अब आज के समाज की स्थिति लो। तुम समझते हो कि जमीन आदि सपत्ति का सग्रह लोग अपनी नैसर्गिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिअे करते है? यह सग्रह यथार्थ में समाज में प्रतिष्ठा के लिअे किया जाता है। देखो, सबसे बड़ी नैसर्गिक तीन ही आवश्यकताअें हैं, भोजन, वस्त्र और घर। अब यदि किसी गरीब का पेट आध सेर या तीन पाव अन्न

में भरता है, तो क्या ऐसा कोअी श्रीमान् है, जो दस-बीस सेर इकट्ठा खाकर पचा सकता है ? बल्कि धनवानों को तो बदहजमी की शिकायत रहती है । वे अुतना पचा नहीं सक्ते जितना निर्धन । यही बात कपड़े के सम्बन्ध मे है। यदि निर्धन का शरीर पॉच-सात गज कपड़े से ढॅकता है, तो क्या कोअी अैसा धनवान मिलेगा, जो सौ-दो सौ गज कपड़ा अिकट्ठा पहन सकता हो ? अब तीसरी नैसर्गिक आवश्यकता घर की है। मैं बड़े-बड़े मकानों में ही रहा हूँ, पर अिन बड़े मकानों के किसी बड़े हाल में यदि किसी श्रीमान् को सुलाया जाय, तो अुसे नींद नहीं आती। रहने के लिअे तो वही बारह से चौदह फुट के कमरे की जरूरत होती है।

नवलकिशोर—किसलिए ? तब यह धन-सग्रह किसलिए होता है ?

रुद्रदत्त—जैसा कि मैंने अभी कहा था समाज में प्रतिष्ठा के लिअे। हम अिन धनवानों को चोर, डाकू, लुटेरा, खून पीनेवाला कहने जरूर लगे हैं, पर क्या आज भी बहुजन समाज अिन्हे अैसा मानता है ?

नवलकिशोर—नहीं।

रुद्रदत्त—अिसीलिअे हमे मूल्यों में परिवर्तन करना है। यदि समाज अिन श्रीमानों को यथार्थ में चोर, डाकू, लुटेरा, खून पीनेवाला मानने लगे, तो कोअी धन-सग्रह न करना चाहेगा। मूल्यों के परिवर्तन के साथ हृदय का परिवर्तन होता है। दोनों का अन्योन्य सम्बन्ध है।

नवलकिशोर—(विचारते हुअे) परन्तु अिस अहिंसक मार्ग से समाज-परिवर्तन में कितना समय लगेगा ?

रुद्रदत्त—तुम समझते हो हिंसात्मक मार्ग से सफलता जल्दी प्राप्त होती है ? मैं भी पहले अैसा ही समझता था, पर यथार्थ में अैसी बात नहीं है। जिस रूस मे सन् '१७ मे क्रांति हुअी और जहाँ मजदूरों के अेकाधिपत्य की सरकार कायम हुअी वह रूस जमीन के प्रश्न की जटिलता के कारण जमीन के सवाल को सन् '३० तक·····

नवलकिशोर—(बीच ही में) तेरह वर्ष तक।

रुद्रदत्त—हाँ, तेरह वर्ष तक हाथ में न ले सका।

नवलकिशोर—और चीन?

रुद्रदत्त—चीन में पहली क्राति हुअी १६१० में। अुस वर्ष वहाँ के शाही राज्य की समाप्ति हो डाक्टर सनयात सन की अध्यक्षता में वहाँ प्रजातंत्र स्थापित हुआ। गत चालीस वर्षों तक चीन मे विविध प्रकार की घटनायें घटित होती रहीं और जमीन के प्रश्न को चीन चालीस वर्षों के बाद हाथ मे ले सका। भारत को स्वराज्य मिला सन् १९४७ मे।

नवलकिशोर—हाँ, सन् '४७ मे।

रुद्रदत्त—और स्वतन्त्र होने के केवल चार वर्ष बाद भारत मे विनोबा ने अिस प्रश्न को उठाया। सरकार ने भी उन्हें सहायता दी। विनोबा ने प्रतिज्ञा की थी कि सन् १९५७ तक वे अिस प्रश्न को हल कर देंगे। यह है सन् '५७। अुन्हें जनता से जमीन मिली, सरकार से जमीन मिली। जमींदारों ने दी, किसानों ने दी। जो लाखों अेकड़ दे सकते थे अुन्होंने लाखों अेकड़। जो कुछ डिसमल ही दे सकते थे अुन्होंने कुछ डिसमल दी। पॉच वर्षों से कम ही समय मे पॉच करोड़ अकड़ जमीन मॉगने से मिल गयी, नवलकिशोर। अुसका अब वितरण हो रहा है। अुस जमीन की लागत के लिए लोगों से करोड़ों रुपया सपत्तिदान के रूप मे भी मिल गया और फिर जिन्हें जमीन बट रही है अुन्हें सरकार प्रचुर परिमाण मे तरह-तरह की तकावियॉ दे रही है। भूदान यज्ञ सचमुच मे अैसा महान् यज्ञ सिद्ध हुआ, जैसा मानव अितिहास के किसी काल मे कहीं भी नहीं हुआ था। सारे मूल्यों मे कैसा परिवर्तन हुआ है, सारे हृदयों मे कैसा परिवर्तन हुआ है? अरे, जमींदारों के हृदय परिवर्तित हो गये।

नवलकिशोर—(मुस्कराते हुअे) आपका हृदय भी परिवर्तित हो गया!

रुद्रदत्त—नवलकिशोर, मै मस्तिष्क से शासित होता हूँ, हृदय से नहीं। मेरा तो मस्तिष्क परिवर्तित हो गया। मै आज भी साम्यवादी हूँ। विनोबा

की अिस अहिंसक क्रान्ति ने मेरा मस्तिष्क भी बदल दिया। साम्यवादी रहते हुअ भी मैं आज मानता हूँ कि सच्ची साम्यवादी समाज-रचना अहिंसा से मूल्यों में परिवर्तन और जनता के हृदय में तथा मेरे सदृश व्यक्तियों के मस्तिष्क में परिवर्तन से ही हो सकती है। वह भारत में होगी, नवलकिशोर। अिस पुराने, अिस बूढ़े भारत के पास अभी भी संसार को नये-नये संदेश देने को हैं, नये-नये मार्ग बताने को है।

नवलकिशोर—तो अब आपका कार्यक्रम क्या होगा ?

रुद्रदत्त—तुम जानते ही हो कि जमीन का सवाल हल करना तो आर्थिक असमानता दूर करने का विनोबा पहला कदम मानते हैं। जितनी भी मेरी जमीन और संपत्ति बची है अुस सबको भूदान-यज्ञ में दान देकर विनोबा के अेक शिष्य के नाते अुनका अनुसरण।

चहौं न सुगति सुमति संपति कछु रिधि सिधि विपुल बड़ाअी।
हेतु रहित अनुराग रामपद बढ़ै अनुदिन अधिकाअी॥
सबै भूमि गोपाल की। संपति सब रघुपति के आही॥

लघु यवनिका

अुपसंहार

स्थान—अुत्तरप्रदेश के गोरखपुर जिले का वही गॉव, जो अुपक्रम में था। समय—रात्रि।

संपूर्णदास—दस.....लगभग दस साल बीते होंगे अुस समय को, जब मैंने आप लोगों को अिसी जगह अेक फिल्म दिखाया था, जिसमें भारत की गरीबी के कुछ भयानक, साथ ही दयनीय हालात सुनाये थे, क्यों ?

एक वृद्ध—जी हॉ, दस बरस बीत गये अुस बात को। मुझे अुस दिन का हाल वैसा-का-वैसा स्मरण है।

रुद्रदत्त—हाँ, तेरह वर्ष तक हाथ में न ले सका।

नवलकिशोर—और चीन?

रुद्रदत्त—चीन मे पहली क्रांति हुअी १९१० मे। अुस वर्ष वहाँ के शाही राज्य की समाप्ति हो डाक्टर सनयात सन की अध्यक्षता मे वहाँ प्रजातत्र स्थापित हुआ। गत चालीस वर्षों तक चीन मे विविध प्रकार की घटनाअें घटित होती रहीं और जमीन के प्रश्न को चीन चालीस वर्षों के बाद हाथ म ले सका। भारत को स्वराज्य मिला सन् १९४७ में।

नवलकिशोर—हाँ, सन् '४७ मे।

रुद्रदत्त—और स्वतन्त्र होने के केवल चार वर्ष बाद भारत मे विनोबा ने अिस प्रश्न को उठाया। सरकार ने भी उन्हें सहायता दी। विनोबा ने प्रतिज्ञा की थी कि सन् १९५७ तक वे अिस प्रश्न को हल कर देंगे। यह है सन् '५७। अुन्हें जनता से जमीन मिली, सरकार से जमीन मिली। जमींदारों ने दी, किसानों ने दी। जो लाखों अेकड़ दे सकते थे अुन्होंने लाखों अेकड़। जो कुछ डिसमल ही दे सकते थे अुन्होंने कुछ डिसमल ही। पाँच वर्षों से कम ही समय मे पाँच करोड़ अेकड़ जमीन माँगने से मिल गयी, नवलकिशोर। अुसका अब वितरण हो रहा है। अुस जमीन की लागत के लिए लोगों से करोड़ों रुपया सपत्तिदान के रूप मे भी मिल गया और फिर जिन्हें जमीन बट रही है अुन्हें सरकार प्रचुर परिमाण मे तरहतरह की तकावियाँ दे रही है। भूदान यज्ञ सचमुच मे अैसा महान् यज्ञ सिद्ध हुआ, जैसा मानव अितिहास के किसी काल मे कहीं भी नहीं हुआ था। सारे मूल्यों मे कैसा परिवर्तन हुआ है, सारे हृदयों मे कैसा परिवर्तन हुआ है? अरे, जमींदारों के हृदय परिवर्तित हो गये।

नवलकिशोर—(मुस्कराते हुअे) आपका हृदय भी परिवर्तित हो गया।

रुद्रदत्त—नवलकिशोर, मे मस्तिष्क से शासित होता हूँ, हृदय से नहीं। मेरा तो मस्तिष्क परिवर्तित हो गया। मे आज भी साम्यवादी हूँ। विनोबा

की भिस अहिंसक क्रान्ति ने मेरा मस्तिष्क भी बदल दिया। साम्यवादी रहते हुअे भी मै आज मानता हूँ कि सच्ची साम्यवादी समाज-रचना अहिंसा से मूल्यों मे परिवर्तन और जनता के हृदय मे तथा मेरे सदृश व्यक्तियों के मस्तिष्क मे परिवर्तन से ही हो सकती है। वह भारत में होगी, नवलकिशोर। भिस पुराने, भिस बूढ़े भारत के पास अभी भी ससार को नये-नये सदेश देने को हैं, नये-नये मार्ग बताने को हैं।

नवलकिशोर—तो अब आपका कार्यक्रम क्या होगा?

रुद्रदत्त—तुम जानते ही हो कि जमीन का सवाल हल करना तो आर्थिक असमानता दूर करने का विनोबा पहला कदम मानते हैं। जितनी भी मेरी जमीन और सपत्ति बची है अुस सबको भूदान-यज्ञ मे दान देकर विनोबा के अेक शिष्य के नाते अुनका अनुसरण।

चहौं न सुगति सुमति संपति कछु रिधि सिधि विपुल बडाअी।
हेतु रहित अनुराग रामपद बढ़ै अनुदिन अधिकाअी॥
सबै भूमि गोपाल की। संपति सब रघुपति कै आही॥

लघु यवनिका

अुपसंहार

स्थान—अुत्तरप्रदेश के गोरखपुर जिले का वही गाँव, जो अुपक्रम मे था। समय—रात्रि।

संपूर्णदास—दस.....लगभग दस साल बीते होगे अुस समय को, जब मैंने आप लोगों को भिसी जगह अेक फिल्म दिखाया था, जिसमें भारत की गरीबी के कुछ भयानक, साथ ही दयनीय हालात सुनाये थे, क्यों?

एक वृद्ध—जी हाँ, दस बरस बीत गये अुस बात को। मुझे अस दिन का हाल वैसा-का-वैसा स्मरण है।

एक व्यक्ति—पर अिह बात तो अब सपन हो गयी।

सपूर्णदास—बिल्कुल ठीक कहते हैं आप। वह बुरे से बुरा समय था। बुरे सपने के समान बीत गया। वह बीता है एक सत के प्रयास से। भाअियो! अिस पुण्यभूमि भारत पर अनतकाल से पुण्यश्लोक ऋषि-महर्षियों, सन्तों और भक्तों का ही प्रभाव रहा है। महात्मा गाधी ने अेक सर्वथा नवीन प्रणाली से अिस देश को स्वतत्र किया। अुनके शिष्य सन्त विनोबा ने एक अभूतपूर्व पद्धति से अिस भूमि की आर्थिक समस्याओं को हल कर अिस देश की गरीबी दूर की। गाधीजी ने स्वराज्य प्राप्त किया अग्रेजों का हृदय-परिवर्तन करके। अतः आज इग्लिस्तान और हिन्दुस्तान सबसे बड़े मित्र हैं। अिसी तरह विनोबाजी आर्थिक समता ला सके हृदय-परिवर्तन करके। अत. किसीके बीच कोअी कटुता पैदा न हुई। फिर विनोबाजी ऐसे नये मूल्यों का निर्माण कर रहे हैं, जिसमे धातु के टुकड़ों और कागज के चिथड़ों का स्थान न होकर उत्पादित पदार्थों का स्थान हो। हर गाँव में वस्तुओं के क्रय विक्रय को गौण और स्वावलम्बन को प्रधानता रहे। जानते हैं अैसे गाँवों मे से पहले गाँव का उन्होंने क्या नाम रखा था?

एक व्यक्ति—कौन सा?

सपूर्णदास—गोकुल। भगवान् श्रीकृष्ण के गोकुल मे सारा गोकुल एक कुटुम्ब बन गया था। कहीं किसी तरह के झगड़े-झाँसे न थे और न कहीं किसी तरह के कोअी मतभेद। वहाँ सब लोग पाँच उगलियों की तरह रहते थे। फिर भगवान् ने गोकुल मे क्रय-विक्रय का स्थान न रहने दिया था। वहाँ प्रधानतया गोरस होता था। उसे यदि कोअी बेचना चाहता, तो भगवान् चोरी तक कर उसे सारे ग्वाल-बालों को बाँट देते। गोरस बेचने को मथुरा जानेवाली गोपियों से गोरस का दान माँगते और दान न मिलता तो अुनके मटकों को फोड़ देते।

सपूर्णदास—भगवान् श्रीकृष्ण के समय के गोकुल के सदृश इन गाँवों मे सारे घाटों के अूपर अुठकर सारे सवर्णों, हरिजनों, हिन्दू, मुसलमान आदि

था अिसी तरह के अन्य भेदभावों को मिटाकर आधुनिक-से-आधुनिक मूहिक ढंग से कार्य करने के सिद्धान्तों के अनुसार कार्य अेवं आमोद-मोद करते हुअे लोग सुख और चैन की वसी बजा रहे हैं।

कुछ व्यक्ति—धन्य है, धन्य है!

(संपूर्णदास दिखाते हैं—छोटे-छोटे वाटिका-गृहों और सकरी-सकरी ड़कों के गाँव हैं। घर प्रायः अेक-से हैं। हर घर के चारो ओर खाली मीन है, जिसमें फलों-फूलों और साग-भाजी के छोटे-छोटे बाग हैं। हर ाग में अेक-अेक कुआँ है, जिसमें रहँट लगे हुअे हैं। घर और सड़क खूब ाफ-सुथरी है। स्त्री और-पुरुष सभी सुखी हैं। देहाती हैं, पर वेष-भूषा े गरीबी न झलककर संपन्नता दृष्टिगोचर होती है। छोटे-छोटे बरामदों और कमरों का स्नानागार तथा रसोअीघर से युक्त मकान है। पुरुष चक्की पीसते हैं। स्त्री रसोअी बनाती है। लड़के-लड़की पढ़ते और खेलते हैं। गाँव की सुन्दर खेती होती है हृष्ट-पुष्ट बैलों से। आबपाशी और अच्छी फसल के हरे-भरे खेत। गृह-अुद्योगों के कअी दृश्य दिखायी देते हैं। कहीं चरखे चल रहे हैं, कहीं कपड़ा बन रहा है, कहीं तेलघानी चल रही है, कहीं गन्ना पिरकर गुड़ बन रहा है, कहीं बढ़अी काम कर रहे हैं और कहीं लुहार। सुन्दर गोशालाअें हैं और अुनमें बड़ी अच्छी गायें दीख पड़ती हैं। अेक ओर महिलाअें दूध दुह रही हैं, तो दूसरी ओर दधि मन्थन हो रहा है। बाल-भवन (नर्सरी) दीख पड़ते हैं, जिनमें खूब हृष्ट-पुष्ट बालक-बालिकाअें खेलते हैं। पाठशालाअें दिखायी देती हैं। मोटे किन्तु साफ-सुथरे वस्त्र पहने हुअे बालक-बालिकाअें पढ़ रही हैं। पाठशाला के अेक मैदान में बालकों के विविध प्रकार के खेल भी दृष्टि-गोचर होते हैं। 'वनस्पति औषधालय' साअिनबोर्डवाले दवाखाने हैं, पर प्रायः खाली रहते हैं। रात को चाँदनी में एक देहाती नृत्य के दृश्य दिखायी देते हैं, जिनमें गाने भी गाये जाते हैं। जैसे—)

इनक्लाब की राह पर	।)	ग्रामराज्य	-)॥
सवाल व जवाब	-)	भूदान तहरीक का खाका	।)

[ENGLISH PUBLICATION]

	Rs As
Bhoodan-Yajna	1—8
Revolutionary Bhoodan-yajna	0—4
Principles and Philosophy of the Bhoodan	0—5
Swaraj-Shastra	1—0
A Picture of Sarvodaya Social Order	0—6
Jeevan-Dan	0—2
Bhoodan-Yajna—the great Challenge of the age	0—4
Vinoba & His Mission	3—0
Demand of the Times	0—12
Sarvodaya & World Peace	0—2
Lessons from Europe	0—8
Non-Violent Economy & World Peace	1—0

अन्य प्रकाशन

(गांधीजी)		सर्वोदय	।=)
हिन्द स्वराज	॥।)	ग्रामसेवा	।=)
आत्मकथा	५)	आरोग्य की कुंजी	।≡)
अनासक्तियोग	१॥)	रामनाम की महिमा	१)
विद्यार्थियों से	२)	(विनोबा)	
सच्ची शिक्षा	२॥)	स्थितप्रज्ञ दर्शन	१)
बुनियादी शिक्षा	१॥)	राजघाट की सन्निधि में	॥।=)
ब्रह्मचर्य (भाग १—२)	१॥।)	ईशावास्य वृत्ति	॥।)
गीताबोध	॥)	विनोबा के विचार (भाग १-२)	३)
मंगल प्रभात	।=)	जीवन और शिक्षण	२)